डाक पंजीयन क्र. L/ RNP/म.प्र./ मन्दसौर/122/ 2024- 26
ई-पेपर www.guruexpress.live

बात आपकी, शब्द हमारे

गुरु एक्सप्रेस

सुबह का अखबार

संपादक – आशुतोष नवाल

वर्ष 18 | अंक 185 | पृष्ठ 4 | मन्दसौर | गुरुवार 18 अप्रेल 2024 | मूल्य 2 रुपया

हार्ट केयर
श्री सिद्धि विनायक
अब नियमित सेवाएं मंदसौर में उपलब्ध
हृदय रोगों के उपचार में अंचल का जाना पहचाना नाम
हृदय रोग विशेषज्ञ
डॉ. पवन मेहता
MBBS, M.D. (Medicine) I DM (Cardiology)
Consultant Interventional Cardiology
परामर्श समय -
प्रतिदिन प्रात 10:00 से सायं 5:00 बजे तक
12, दशपुर कुंज रोड, सिविल हॉस्पिटल के सामने, मंदसौर (म.प्र.) 07422-490333

पैंतीस गौवंश मुक्त कराए चार आरोपी गिरफ्तार

मंदसौर, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। दिल्ली- मुंबई एक्सप्रेस वे पर ग्रामीणों ने गौ वंश से भरे वाहन पकडे। इसके बाद पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने जांच पडताल की। जिसमें पता चला कि अवैध रूप से गौ वंश की तस्करी की जा रही थी। पुलिस ने इस मामले में लोडिंग वाहनों में ले जाए रहे 35 गौ वंश को मुक्त कराया है। वहीं चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

जानकारी के अनुसार शुक्रवार को सीतामऊथाने के ग्राम सेदरा के पास से गुजर रहे एक्सप्रेस वे पर लोगों ने ट्रक और पिकअप में गौ वंश को ले जाते हुए देखा। इन्हें रोककर पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच पडताल की। वाहन चालकों से पूछताछ कर कागजात मांगे गए। जिसके बाद पता चला कि अवैध रूप से गौ वंश को ले जाया जा रहा था। पुलिस ने बताया कि दो पिकअप एमपी 45 जी 1157, एमपी 45 जी 1687, आयशर वाहन एमपी 13 जीए 2521 व ट्रक एमपी 09 एचजी 4723 में ले जाए जा रहे कुल पैंतीस केडों को मुक्त कराकर गौशाला पहुंचाया गया। पुलिस ने बताया कि इस मामले में अकबर पिता गफुर खाँ उम्र 28 साल निवासी शामगढ थाना शामगढ, मुन्ना पिता वारू भील उम्र 23 साल निवासी देधला थाना कल्याणपुरा झाबुआ , विनोद पिता अनसिंह सिंगाड उम्र 23 साल निवासी झावलिया थाना रायपुरिया जिला झाबुआ , मुन्नालाल पिता सुखलाल गवली उम्र 55 साल निवासी थांदला जिला झाबुआ को गिरफ्तार कर केस दर्ज किया गया है।

पुलिस ने जप्त किया 139 किलो डोडाचूरा, एक गिरफ्तार

मंदसौर, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। पुलिस ने मंगलवार को जिस कार का पीछा कर पकडा था। उस कार से डोडाचूरा बरामद किया है, इस मामले में एक आरोपी गिरफ्तार कर लिया था, वहीं एक फरार आरोपी को तलाशा जा रहा है। जानकारी के अनुसार मंगलवार की शाम नारायण गढ पुलिस एक कार का पीछा करती हुई पिपलिया पहुंची थी, यहां चौपाटी पर तेज रफ्तार से भाग रहे कार के ड्राइवर ने एक कार, बाइक को टक्कर मार दी थी, जिसे बाद मे पुलिस ने इसे महू-नीमच रोड अंग्रेजी शराब दुकान के सामने सर्विस रोड पर नाकाबंदी कर रोक लिया था,। इसमें एक आरोपी पुलिस ने पकड़ लिया था। वहीं एक फरार हो गया था। तलाशी के दौरान कार (जीजे 06 पीए 5664) में 7 बोरों में भरा 139 किलो डोडाचूरा बरामद हुआ। इस मामले में पुलिस ने राजस्थान नयावाडा (बागोडा, सांचोर) निवासी प्रवीण कुमार पिता रघुनाथ विश्नोई को एनडीपीएस एक्ट में गिरफ्तार कर डोडाचूरा व कार को जब्त किया। जानकार सूत्रों के अनुसार आरोपी उक्त डोडाचूरा नारायणगढ थाना क्षेत्र के हरसोल से भरकर लाए थे, जो राजस्थान बाडमेर ले जा रहे थे। इधर एसडीओपी नरेन्द्र सोलंकी ने बताया पूछताछ के दौरान आरोपी ने मौके से भागे आरोपी का नाम बाडमेर निवासी नरेशकुमार होना बताया है। पुलिस आरोपी का रिमाण्ड लेकर पूछताछ कर रही है।

नाम की उत्कृष्ट, फुटपाथ बने जागीर

सड़क पर वाहन..फुटपाथ पर कब्जा..पैदल कहां चले

मंदसौर, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। शहर में करोडों की लागत से बनी उत्कृष्ट सडकों में पहले ही खेल हुए। उत्कृष्ट सडक़ नाम इसलिए दिया गया कि इंदौर जैसे शहरों की तर्ज पर मंदसौर को संवारा जा सके। लेकिन , उत्कृष्ट सडक़ पैदल राहगिरों के लिए तनाव देने लगी। बात यहां फुटपाथ की कर रहे हैं। फुटपाथ और डिवाईडर बनने के बाद सडक़ छोटी होना तय है। लेकिन, सडक़ सिर्फ वाहनों के लिए बनाई जाती है और फुटपाथ पैदल चलने वालों के लिए। संजीत रोड की बात करें तो यहां फुटपाथ पर ही कब्जा हो गया है। सडक़ पर चार पहिया वाहन हवा से बात करते हुए निकलते हैं। प्रश्न यह उठता है कि पैदल राहगिर कहां चले। अब यहीं स्थिति रेवास देवड़ा रोड पर बनने लगी है। यहां फुटपाथ पर धीरे धीरे कब्जा होने लगा है। चूंकि, तेलिया तालाब सहित अन्य रेस्टोरेंट, स्कूल, कॉलेज और मैरिज गार्डन होने से यहां खासी चहल पहल शुरु हो गई है। यही कारण है कि लोगों की निगाहें यहां के फुटपाथ पर भी पड़ गई है।

फुटपाथ पर ठेले-कुर्सियां, सड़क पर कार...

पैदल चलने के लिए बनाए गए फुटपाथ सब्जी, फल, चाट, फुल्की, चाय- पान ठेले-टपरे और रेहडी वालों के साथ व्यापारियों की जागीर बन गए हैं। इन्हें मुक्त कराने के लिए न नगरपालिका आगे आ रही है न ही पुलिस इस मामले में कोई रुचि ले रही है। संजीत रोड की बात करें तो यहां सुबह और दोपहर में सिर्फ ठेले खडे होते हैं। इसके बाद शाम को दुकानदारी शुरु होते ही ठेले के आसपास कुर्सियां जम जाती है। इसके बाद यहां आने वाले ग्राहक कार और अन्य वाहन सडक़ पर खडा कर देते हैं। कई गांवों को जोडने वाले व्यस्ततम मार्ग पर इसके बाद यातायात व्यवस्था तो बिगड़ ही रही है, वहीं प्रश्न यह उठता है कि पैदल व्यक्ति कहां चले?

स्टेशन रोड पर भी यही स्थिति...

अब बात करें स्टेशन रोड वाली उत्कृष्टसडक़ की। यहां फुटपाथ बनाया ही नहीं गया है। लेकिन, यहां फुटपाथ की जगह पर ठेले और कुर्सियां लगा दी गई। बीच में डिवाईडर और आसपास ठेले कुर्सियां। यहां भी संजीत रोड जैसी ही स्थिति बन रही है। वाहन सवारों के साथ पैदल राहगिरों को भी खासी दिक्कतों का सामना करना पड रहा है।

संजीत रोड के बाद अब रेवास देवड़ा रोड भी निशाने पर

वाहन हो रहे पार्क...

शहर के फुटपाथों को जहां लोगों और व्यापारियों ने कब्जा लिया है। फुटपाथ पर ही वाहन पार्क किए जा रहे हैं। संजीत रोड की बात करें तो यहां फुटपाथ पर व्यापारियों और ग्राहकों के वाहन पार्क होते हैं तो रेवास देवडा रोड पर रेस्टोरेंट और रिसोर्ट में आने वाले लोगों के वाहन खडे हो रहे हैं।

दो वर्षों में फुटपाथ पर तेजी से अतिक्रमण...

नगर पालिका, जिला प्रशासन और यातायात पुलिस की अनदेखी और नेताओं की सरपरस्ती के चलते शहर में पिछले करीब दो वर्षों में अतिक्रमणों की बाढ आ गई है। हर सडक़ के फुटपाथ पर व्यवसायियों ने कब्जा जमा लिया है। प्रधानमंत्री स्व-निधि योजना के तहत आत्मनिर्भर बनाने की योजना का हवाला देते हुए कई लोग योजना के तहत मिलने वाले लोन की खातिर स्ट्रीट वेंडर बन बैठे हैं।

धरे रहे गए फुटपाथ के मानक...

इंडियन रोड कांग्रेस के तय मानकों के तहत फुटपाथ की उंचाई तीन सौ मिलीमीटर और चौडाई ढाई मिलीमीटर रखी जाना होती है। फुटपाथ बनाने के लिए एसिड रजिस्टेंट ब्रिक्स ईंट का उपयोग किया जाना होता है। ताकि हर मौसम में फुटपाथ की गुणवत्ता ठीक रहे। वहीं वर्तमान में पेवर ब्लाक से बनाए जा रहे।

मधुमक्खियों ने किया अटैक: 40 लोगों को बनाया निशाना, चार भर्ती

मल्हारगढ़, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। क्षेत्र के ग्राम भैसाखेडा स्थित भैसासरी माता मंदिर में मधुमक्खियों के छत्ते से हजारों मधुमक्खियां उडी और लोगों को काटने लगी। नवमी होने के साथ ही यहां मेले का आयोजन भी था। जिससे लोगों की भीड ज्यादा थी। इससे यहां भगदड जैसी स्थिति बन गई। इस घटना में मधुमक्खियों के काटने से करीब 35 से 40 लोग घायल हुए हैं। इनमें बच्चे, पुरूष, बुजुर्ग व महिलाएं सभी शामिल है। इनमें से कुछ लोगों को उपचार के लिए मल्हारगढ के सरकारी अस्पताल ले जाया गया।

जानकारी के अनुसार आज रामनवमी के उपलक्ष्य में भैंसासरी माता जी मंदिर में भव्य मेले का आयोजन हो रहा था। उक्त मेले में सैंकडों की संख्या में लोग पहुंचे थे। इसी दौरान दोपहर करीब 2.30 से 3 बजे के मध्य पेड पर स्थित छत्ते में मौजूद मधुमक्खियों के झुंड ने इन लोगों पर हमला कर दिया। मधुमक्खी के हमले से करीब 35 से 40 लोग घायल हुए हैं। इनमें से संतोष पिता गोपाल लोट निवासी मल्हारगढ व रोहित पिता महेंद्र सिंह बंजारा निवासी भैसाखेडा सहित चार लोग मल्हारगढ अस्पताल में उपचाररत है। वहीं अन्य लोग भी अपने-अपने स्तर पर अन्य स्थानों पर उपचाररत है। इस घटना से मेला स्थल पर भगदड मच गई। सूचना मिलते ही जिम्मेदार अधिकारी व पुलिस टीम भी मौके पर पहुंचे। एंबुलेंस भी घटनास्थल व अस्पताल पहुंची। उल्लेखनीय है कि भैंसासरी माताजी पर पहले भी कई बार मधुमक्खियों के काटने से लोग जख्मी हो चुके है। यह पिकनिक स्पाट भी बन चुका है, यहां रोज सैकडों लोग आते है, मधुमक्खियों के छत्ते से आए दिन मक्खियां उड जाती है और लोगों को काटती जाती है, कभी भी बडा हादसा हो सकता है।

नही बदलेगा राजा, अच्छी होगी बारिश

गोठड़ा माताजी की भविष्यवाणी सुनने उमड़ा भक्तों का सैलाब

जावरा, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। चैत्र नवरात्र के अंतिम दिवस बुधवार को ग्राम गोठडा स्थित महिषासुर मर्दिनी गोठडा वाली माताजी की भविष्यवाणी सुनने जनसैलाब उमडा। पंडा नागूलाल द्वारा की जाने वाली वर्ष भर की भविष्यवाणी सुनने दूर-दूर से भक्त उपस्थित हुए। ठेठ मालवी भाषा में होने वाली इस भविष्यवाणी में कहा गया कि राजा उज रेगा। मतलब राजा नहीं बदलेगा। हालांकि किसी का नाम यहां नहीं लिया गया। इसके अलावा अच्छी बारिश की भविष्यवाणी भी की गई।

रामनवमी बुधवार को चिलचिलाती धूप में दोपहर 2:10 बजे जब गोठडा माताजी के रूप में पंडा श्री नागुलाल गायरी ने भविष्यवाणी सुनाई। जिसमें सैकडों की संख्या में भक्त मौजूद थे। उज्जैन जिले के खाचरोद तहसील के ग्राम गोठडा में एक ही परिवार द्वारा करीब चार पीढी से भविष्यवाणी कर रहे नागुलाल पंडा ने 7 मिनट 48 सेकंड आम जन को संबोधित किया। भविष्यवाणी में कहा गया कि वैशाख में पानी है। इस साल में गर्मी तेज रहेगी। मावठा वैशाख से लेकर जेठ में भी है। आधा आषाढ में सातम तक बोवनी होगी। ज्यादा ठंड से फसलों को नुकसान होगा। ओला वृष्टि भी होगी, जिसमें कहीं-कहीं ज्यादा नुकसान होगा। गेहूं की फसल अच्छी होगी, प्याज एवं लहसुन के भाव अच्छे रहेंगे। जाते हुए वैशाख माह से आषाढ माह तक बीमारियां खूब फैलेगी। चांदी के भाव तेज रहेंगे, गेहूं लहसुन के भाव अंधा धुंध बढेंगे। कुंवार माह में आंधी तूफान आएंगे। लोगों को अधिक से अधिक यज्ञ करने के साथ ही गो सेवा भी करना है। इस साल दुर्घटनाएं खूब होगी। माताजी ने कहा कि इस कलियुग में कैसी मुश्किल है कि बेटा बाप को मार रहा है और लोगों को मां और बेटी का भी ध्यान नहीं है। पानी खूब गिरेगा। सबसे आखिर में माताजी ने वर्तमान प्रधानमंत्री का नाम लिए बिना भविष्यवाणी की कि राजा उज रेगा। इसके पूर्व श्री महिषासुर मर्दिनी मंदिर से माता जी की वाडी मलेनी नदी पर पहुंची, जहां हजारों लोग चिलचिलाती धूप में माता जी की भविष्यवाणी सुनने के लिए बेताब देखे गए। करीब 45 वर्षों से लगातार सेवा दे रहे समाजसेवी बडावदा निवासी समाजसेवी मांगीलाल अजमेरा ने बताया कि गोठडा माताजी की भविष्यवाणी सुनने के लिए महाराष्ट्र, छत्तीसगढ, राजस्थान एवं मध्य प्रदेश के अनेक जिलों खासकर मालवा अंचल से हजारों लोग सुबह से ही चंबल नदी के तट पर पहुंच गए थे।

अयोध्या में राम नवमी की धूम

रामलला के दर्शन के लिए लगा भक्तों का तांता

अयोध्या, 17 अप्रैल। रामनवमी के खास मौके पर अयोध्या के राम मंदिर में उस वक्त अद्भूत नजारा देखने को मिला, जब प्रभु श्री राम के ललाट पर सूर्य तिलक किया गया। यह अलौकिक नजारा भक्ति से भावविभोर कर देने वाला था। जैसे ही प्रभु श्री राम का सूर्य तिलक हुआ। पूरा मंदिर परिसर श्रीराम के जयकरो के उद्घोष से गूंज उठा।

बुधवार रामनवमी के दिन रामलला की विशेष पूजा की गई। अयोध्या में भक्तों का जनसैलाब उमड़ पड़ा। दोपहर ठीक 12 बजे रामलला का सूर्य तिलक हुआ। सूर्य तिलक होने के बाद भगवान श्री राम की विशेष पूजा की गई और आरती उतारी गई। इस दौरान जय श्री राम के जयकारो के उद्घोष से पूरा मंदिर परिसर गूंज उठा। अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद पहली बार अयोध्या के राम मंदिर में रामनवमी मनाई जा रही है। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया कि श्री रामनवमी की पावन बेला में श्री राम जन्मभूमि मंदिर में प्रभु श्री रामलला सरकार का दिव्य अभिषेक किया गया।

अयोध्या में सुबह से ही भक्तों की भीड़ उमड़ती रही। रामनवमी के अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु अयोध्या राम मंदिर में भगवान रामलला के दर्शन करने के लिए पहुंचे। रामनवमी के अवसर पर अयोध्या में राम मंदिर के साथ ही हनुमानगढ़ी में भी बड़ी संख्या में भक्तों की रौनक दिखी।

रामलला का हुआ सूर्य तिलक...

रामनवमी पर अयोध्या में सुरक्षा व्यवस्था को लेकर अयोध्या रेंज के आईजी प्रवीण कुमार ने बताया कि व्यवस्था पहले से ही की गई है। हमने इलाकों को दो सेक्टर में बांटा है। दर्शन सुबह 3:30 बजे से शुरू हो गए हैं। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ने एक्स पर तस्वीरें शेयर करते हुए लिखा, श्री रामनवमी की पावन बेला में श्री राम जन्मभूमि मंदिर में प्रभु श्री रामलला सरकार का दिव्य अभिषेक किया गया।

धर्म के जानकारों का कहना है कि बुधवार दोपहर 12 बजे अभिजीत मुहूर्त में रामलला का 3 मिनट तक सूर्य तिलक हुआ। सुबह 3:30 बजे से मंदिर के कपाट खोल दिए गए थे। हालांकि, आम दिनों में कपाट 6.30 बजे खुलते हैं।

अब महिलाएं भी पीछे नहीं...

वाहनों में तीन साल में दुगुनी हुई हिस्सेदारी

मंदसौर, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। पहले महिलाओं या युवतियों को कॉलेज या बाजार जाना होता तो घर के किसी पुरुष सदस्य पर निर्भर थी। लेकिन, अब धीरे-धीरे इस मामले में भी महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही है। तीन साल के दौरान रोड पर स्कूटर से लेकर कार चलाने वाली महिलाओं की संख्या में खासा इजाफा देखने को मिला है। इस अवधि में टू- थ्री और फोर व्हीलर चलाने वालों में 13 फीसदी हिस्सा युवतियों-महिला वर्ग का रहा है। जो तीन साल पहले 2021 तक की स्थिति में केवल 6.2 प्रतिशत ही था। तुलनात्मक 2 साल में ग्राफ दोगुना से अधिक बढा है। खासकर महिलाओं ने स्कूटर कैटेगरी व - ई-स्कूटर में ज्यादा रुचि ली है। जो प्रमुख वजह सामने आई हैं इसमें कॉलेज पढाई, स्वरोजगार, नौकरीपेशा, घरेलू काम होना इसमें शामिल हैं। पुरुषों की तुलना में लर्निंग व परमानेंट लाइसेंस बनवाने वाली महिलाओं के प्रतिशत में पहले से ज्यादा बढ़त है।

जिले में 3 सालों के दौरान जिला मुख्यालय से लगाकर शामगढ, गरोठ, भानपुरा, दलौदा, पिपलिया मंडी, मल्हारगढ, नारायणगढ तक में अनेक कंपनियों के शोरूम खुले हैं। जहां पेट्रोल स्कूटर के अलावा ई-स्कूटर तक की बिक्री बढी हैं। इन वाहनों की पहुंच गांव-गांव तक हो चुकी हैं। जो कम वजन के होने से कंट्रोल हो जाते हैं। आंकडों के मुताबिक 1 अप्रैल 2021 से 10 जून 2024 के दौरान जिले में महिलाओं के तीन हजार से ज्यादा लर्निंग लाइसेंस बने। इसके अलावा ई-व्हीकल में कम लोड वाले स्कूटर का पंजीयन अनिवार्य नहीं होने से उसका रजिस्ट्रेशन परिवहन विभाग में नहीं होता, केवल हैवी बैटरी वाले वाहन दर्ज होते हैं। इसी तरह ई- थ्री व्हीलर में महिलाओं का दबदबा है।

बता दे की जिले में 71 से अधिक महिलाओं को गनेडीवाल चेरिटेबल ट्रस्ट ने वाहन उपलब्ध करा रखे हैं। जिससे फोर व्हीलर चलाने वाली महिलाओं की संख्या में इजाफा देखने को मिल रहा है। यह तीन साल में दर्ज वाहन संख्या का 13 फीसदी है। 2021 अप्रैल से पहले देखा जाए तो साल 2018 तक में ग्राफ 6 प्रतिशत के आसपास रहा था। हालांकि वाहन चलाने वालों में 87 फीसदी के साथ दबदबा पुरुषों का है। पिछले 2 सालों में महिला वाहन चालकों की संख्या में दो गुना का ग्राफ बडी तेजी से बढा है। इधर, जागरूकता के लिए महिलाएं भी प्रयासरत हैं।

आंकड़ा 6.2 से बढक़र हुआ 13 प्रतिशत

युवतियों के लिए कॉलेज में कैंप तक लगे

जिले में 1 अप्रैल 2021 से 10 जून 2024 के दौरान जिले में युवतियों-महिलाओं के तीन हजार से ज्यादा लर्निंग व परमानेंट लाइसेंस बने हैं। इस दौरान कॉलेज स्तर पर युवतियों के लिए कैंप तक लगे हैं। इस अवधि में ओवरऑल तीन हजार से ज्यादा लाइसेंस जारी हुए हैं, इसमें से महिलाओं का हिस्सा 13 फीसदी रहा है। जो तेजी तीन साल में देखी, ऐसा पहले नहीं हुआ।

डीजे वाले बाबू जरा धीरे बजाओ..

कानफोडू आवाज से आम लोगो के साथ हृदयाघात के मरीज भी परेशान

राजू सोनी

नाहरगढ़, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। इन दिनों शादी ब्याह सहित अन्य कार्यक्रमों की धूम मची है। नाहरगढ़ नगर के अधिकांश गली मोहल्ले में ध्वनि विस्तारक यंत्र डीजे का जमकर उपयोग हो रहा है। लेकिन, डीजे के उपयोग में सरकारी निर्देशों का पालन नहीं किया जा रहा है। यहां तक की कोर्ट आदेश की भी जमकर धज्जियां उड़ाई जा रही है। नतीजा यह है कि डीजे के आवाज ने लोगों की नींद उडा रखी है। कानफोडू आवाज से कई लोग परेशान हैं।

जानकारी के मुताबिक सुप्रीम कोर्ट में पर्यावरण ध्वनि प्रदूषण को प्रभावों से मुक्त करने के लिए किसी व्यक्ति के द्वारा डीजे साउंड सिस्टम में लाउडस्पीकर चलाकर निर्देश उलंघन करने वाले के खिलाफ कार्यवाही का प्रावधान किया है। लेकिन, सुबह हो या दिन ओर शाम या रात डीजे संचालक अपनी मनमानी पर उतारू है। डीजे संचालको में ज्यादा आवाज के साथ डीजे सेट तैयार करने की होड़ सी मची है। जिसको देखो बिना किसी निश्चित दायरे से ज्यादा तेज आवाज में डीजे बजा रहे हैं। डीजे संचालको इसी हठ के कारण बूढे व बच्चों के साथ-साथ अन्य तरह के रोगियों को जोरदार कानफोडू आवाज से परेशानी हो रही है। डाक्टरो के मुताबिक तेज आवाज से व्यक्ति मानसिक तनाव में आ रहा है। तेज आवाज में डीजे बजाने वालो पर पब्लिक जमकर गुस्सा है। तुरंत शासन प्रशासन को डीजे साउंड वालो को हिदायत देकर उचित कार्रवाई करना चाहिए। डीजे के तेज शोर से आम आदमी यानी स्वस्थ व्यक्ति परेशान होता है। इसी तेज ध्वनि व धमक मरीजों के लिए जानलेवा साबित हो रहा है। ज्यादातर निर्धारित मापदंड से अधिक आवाज पर बजाए जा रहे हैं। जो ध्वनि प्रदूषण के साथ ही आम लोगों के लिए जानलेवा साबित हो रहा है।

विचार-मंथन

महंगाई पर नियंत्रण करने का प्रयास

मार्च महीने में खुदरा महंगाई का रुख कुछ नरमी लिए दर्ज हुआ। निस्संदेह यह राहत की बात है। फरवरी में खुदरा महंगाई की दर 5.09 फीसद थी, जो मार्च में घट कर 4.85 फीसद पर आ गई। यह पिछले दस महीनों का सबसे निचला स्तर है। हालांकि रिजर्व बैंक लगातार दावा करता रहा है कि वह महंगाई पर बहुत जल्दी काबू पा लेगा और इसे चार फीसद पर स्थिर कर सकेगा। स्वाभाविक ही ताजा आंकड़े से रिजर्व बैंक ने कुछ राहत की सांस ली होगी। मगर दावा करना मुश्किल है कि आगे भी महंगाई का रुख नीचे की तरफ ही बना रहेगा।खुदरा महंगाई की दर में आई ताजा कमी की बड़ी वजह तेल, गैस और बिजली की कीमतों का घटना है। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में जिस तरह कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव आ रहा है, उसमें महंगाई को लेकर कोई अंतिम दावा करना कठिन है। खुदरा महंगाई में खाद्य वस्तुओं की कीमतों में कोई खास अंतर दर्ज नहीं हुआ है। फरवरी में खाद्य वस्तुओं की महंगाई 7.8 फीसद दर्ज हुई थी, जो मार्च में घट कर 7.7 हो गई। सबसे चिंता की बात है कि रोजमर्रा इस्तेमाल होने वाले मोटे अनाज, दूध, अंडे वगैरह की कीमतों में कोई कमी दर्ज नहीं हुई है। आखिर आम लोगों का वास्ता तो इन्हीं चीजों से होता है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महंगाई का अंतर भी चिंता की एक बड़ी वजह है। ग्रामीण क्षेत्रों में खुदरा महंगाई दर 5.45 फीसद है, जबकि शहरी क्षेत्रों में 4.14 फीसद है। यह 1.31 फीसद का अंतर पिछले तेईस महीनों का सबसे ऊंचा स्तर है। यानी ग्रामीण लोगों पर महंगाई की मार शहरी लोगों की अपेक्षा अधिक पड़ रही है, जबकि क्रयशक्ति की दृष्टि से ग्रामीण लोगों की क्षमता शहरी लोगों की अपेक्षा कम होती है। उत्पादन के मामले में तेईस प्रमुख विनिर्माण उद्योगों में से दस का उत्पादन घटा है। रिजर्व बैंक अपनी रेपो दर को यथावत बनाए रख कर महंगाई के मोर्चे पर कामयाबी हासिल करने का प्रयास कर रहा है, मगर जिस तरह अनेक स्तरों पर विसंगतियां और असंतुलन नजर आ रहा है, उसमें महंगाई पर काबू पाना उसके लिए चुनौती बना हुआ है। एक तरफ बड़ी कारों और भवनों की बिक्री में तेजी दर्ज हो रही है, तो दूसरी तरफ औद्योगिक इकाइयों के उत्पादन में कमी देखी जा रही है। जिस मौसम में अनाज, फल और सब्जियों की बाजार में आवक तेज होती है, उसमें भी उनकी कीमतें ऊपर बनी रहती हैं। महंगाई दरअसल, अर्थव्यवस्था में असंतुलन का संकेतक होती है। भले विकास दर के सात फीसद पर रहने के अनुमान और भारत के दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाने के आंकड़ों से देश में समृद्धि के संकेत मिलते हों, पर हकीकत यह है कि खुद सरकार के मुताबिक करीब बयासी करोड़ लोग मुफ्त के राशन पर निर्भर हैं। रोजगार के मामले में स्थिति निरंतर भयावह होती जा रही है। सामान्य बोध यही है कि रोजगार के नए अवसर सृजित होते हैं तो लोगों की क्रयशक्ति बढ़ती है और उससे बाजार में पूंजी का प्रवाह तेज होता है। मगर इस दिशा में कोई व्यावहारिक कदम नहीं उठाए जा पा रहे हैं। चुनाव के मद्देनजर ईंधन की कीमतों में कमी करने से महंगाई का रुख जरूर कुछ नीचे की तरफ हो गया है, पर यह स्थायी और व्यावहारिक समाधान नहीं है। बुनियादी कमजोरियों को दूर किए बिना शायद ही जमीन पर बेहतरी नजर आए।

भाजपा की एकला चलो रणनीति से तीन और राज्यों में कामयाबी का रास्ता

अजय सेतिया

भारतीय जनता पार्टी ने 2014 में पहली बार तमिलनाडु, हरियाणा और बिहार में अकेले चुनाव लड़ा था। उससे पहले इन तीनों ही राज्यों में गठबंधन के साथ चुनाव लड़ा करती थी। बिहार में वह जेडीयू की जूनियर पार्टनर थी, हरियाणा में ओम प्रकाश चौटाला की इंडियन नेशनल लोकदल की जूनियर पार्टनर थी और तमिलनाडु में कभी अन्नाद्रमुक और कभी द्रमुक की जूनियर पार्टनर बन कर चुनाव लड़ती थी। 2014 में भाजपा ने ओम प्रकाश चौटाला की इनलो से गठबंधन तोड़ कर हरियाणा जनहित कांग्रेस के साथ मिल कर लोकसभा चुनाव लड़ा था। जिससे भाजपा तो दस में से सात सीटें जीत गई, लेकिन इनलो दो सीटों पर रुक गई। 2019 में भाजपा ने अकेले चुनाव लड़ा और सभी 10 सीटें जीत गई। बिहार में भाजपा ने 2014 में जेडीयू के बिना अकेले चुनाव लड़कर 22 सीटें जीती थीं। लेकिन 2017 में जेडीयू दुबारा भाजपा के साथ आ गया तो गठबंधन के कारण भाजपा 17 सीटों पर चुनाव लड़ी और सभी 17 जीती। 2009 तक भाजपा उड़ीसा में भी बीजू जनता दल की जूनियर पार्टनर थी। 2009 में उड़ीसा में भाजपा पहली बार अकेले चुनाव लड़ी थी, तब से वह अपनी ताकत बढ़ाती रही है। पिछले लोकसभा चुनावों में बीजू जनता दल को 21 में से 12 और भाजपा को 8 सीटें मिली थी। इस बार उसके बीजू जनता दल से आगे निकल जाने के पूरे आसार लग रहे हैं। भाजपा हरियाणा जैसा प्रयोग इस बार तमिलनाडु और पंजाब में भी दोहरा रही है। ये दोनों ही ऐसे अहिन्दी भाषी राज्य हैं, जहां भाजपा के पांव कभी नहीं जमे। तमिलनाडु में तो भाजपा पहले भी एक बार 2014 में अकेले चुनाव लड़ चुकी है, लेकिन पंजाब में लंबे समय से अकाली दल के साथ गठबंधन में चुनाव लड़ रही थी। पंजाब में भाजपा 1998 तक किसी चुनाव में कोई सीट हासिल नहीं कर सकी थी। 1998 में पहली बार अकाली दल के साथ गठबंधन में अमृतसर, गुरदासपुर और होशियारपुर सीटें जीती, जबकि आठ सीटें अकाली दल और एक सीट जनता दल जीती थी। 1999 में जब वाजपेयी ने दूसरी बार केंद्र में सरकार बनाई, भाजपा की सीट पंजाब में तीन से घट कर एक रह गई थी। 2004 में जब केंद्र में कांग्रेस की सरकार बनी, तो भाजपा पंजाब में फिर तीन सीटें जीत गई। 2009 में सिर्फ एक सीट जीती, जबकि 2014 और 2019 में दो-दो सीटें ही जीती। भाजपा का अकाली दल के साथ लोकसभा की तीन और विधानसभा की 23 सीटों पर गठबंधन हुआ था। जिस कारण भाजपा उन्हीं सीटों पर सिमट कर रह गई थी। इस बार पहली बार भाजपा अकेले चुनाव लड़ रही है, तो उसने अब तक छह उम्मीदवार घोषित कर दिए हैं। भाजपा और अकाली दल के अलग अलग लड़ने तथा कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के भी अलग अलग लड़ने से पंजाब का चुनाव चौकोना हो गया है। जिस आम आदमी पार्टी ने 2022 के विधानसभा चुनाव में रिकार्ड सीटें जीती थीं, उसे पंजाब में उम्मीदवार तक नहीं मिल रहे। आम आदमी पार्टी ने अपने पांच मंत्रियों को चुनाव मैदान में उतार दिया है। कांग्रेस भी अपने पांच विधायकों को चुनाव लड़ाने का मन बना चुकी है। देश के बाकी हिस्सों की तरह पंजाब में भी बड़े पैमाने पर दलबदल हो रहा है। आम आदमी पार्टी का जालन्धर का एक उम्मीदवार भाजपा में शामिल हो गया है। आम आदमी पार्टी के पूर्व सांसद धर्मवीर गांधी कांग्रेस में शामिल हो गए हैं। आम आदमी पार्टी और भाजपा दोनों कांग्रेसियों को अपनी पार्टी में शामिल करवा कर उन्हें उम्मीदवार बना रही है। भाजपा ने जालन्धर में आम आदमी पार्टी के सांसद को टिकट दिया है, तो पटियाला और लुधियाना में कांग्रेस के सांसद को टिकट दिया है। ये तीनों सीटें ऐसी हैं, जहां भाजपा कभी नहीं जीती। इसके अलावा अमृतसर, गुरदासपुर और होशियारपुर भाजपा की जीतने वाली सीटें हैं। फरीदकोट में भाजपा ने अपने दिल्ली के सांसद हंस राज हंस को मैदान में उतारा है। नरेंद्र मोदी के चेहरे और चौकोने मुकाबले में भाजपा 13 में से छह सात सीटें आसानी से जीत सकती है। इसी तरह तमिलनाडु में भाजपा 2014 को छोड़कर पिछले 25 साल से द्रमुक या अन्ना द्रमुक के साथ गठबंधन में चुनाव लड़ती रही है। 1999 में जब सोनिया गांधी ने जयललिता के साथ सांठगांठ करके एक वोट से वाजपेयी सरकार गिराई थी, तो कांग्रेस ने अन्ना द्रमुक के साथ मिल कर चुनाव लड़ा था। क्योंकि अन्ना द्रमुक कांग्रेस के साथ चली गई तो उसकी प्रतिद्वन्दी द्रमुक भाजपा के साथ आ गई थी। वाजपेयी की सरकार गिराने के कारण तमिलनाडु में जयललिता के खिलाफ जबर्दस्त गुस्सा था, जिसका भाजपा के साथ साथ द्रमुक को भी फायदा हुआ। भाजपा नीलगिरी, कोयंबटूर, तिरुचिरापल्ली, नागरकोईल चार सीटें जीत गई थी, दो सीटों पर भाजपा दूसरे नंबर पर रही। इनमें एक सीट शिवगंगा कांग्रेस से 23 हजार वोट से हारी थी, और दूसरी सीट तेनकाशी अन्नाद्रमुक से सिर्फ 883 वोटों से हारी थी। करीब पांच साल द्रमुक वाजपेयी सरकार में भाजपा के साथ एनडीए में रही। 2004 के चुनावों से पहले द्रमुक भाजपा का साथ छोड़ गई, तो अन्नाद्रमुक साथ आ गई। यह आश्चर्यजनक चुनाव था, जिसमें द्रमुक 16 और कांग्रेस दस सीटें जीत गई थी। अन्नाद्रमुक के साथ भाजपा को भी कुछ नहीं मिला। 2009 में भी यही गठबंधन रहा। अन्नाद्रमुक तो 39 में से 12 सीटें जीत गई थी, लेकिन भाजपा एक भी सीट नहीं जीत पाई। 2014 में वह टर्निंग प्वाइंट आया, जब देश में मोदी लहर चल रही थी, भाजपा ने द्रमुक या अन्ना द्रमुक के साथ गठबंधन नहीं किया था। भाजपा ने छोटे छोटे सात दलों के साथ मिल कर अपना मोर्चा बनाया और तीसरी ताकत के रूप में उभरने की कोशिश की। वह कन्याकुमारी की एक सीट जीत गई, उसके सहयोगी पीएमके ने भी एक सीट जीती। भाजपा के गठबंधन को 18.80 प्रतिशत वोट मिले, बाकी सारी 37 सीटें अन्नाद्रमुक जीत गई। इसका कारण था यूपीए सरकार में द्रमुक के मंत्रियों का अंधाधुंध भ्रष्टाचार। जिसमें ए. राजा और कनिमोई को जेल जाना पड़ा था।

भारत में पर्यावरण क्यों नहीं बनता चुनावी मुद्दा?

संजय तिवारी

अटल बिहारी वाजपेयी ने इस सीजन पर सवाल उठाया तो संभवतः गर्मी के कारण चुनाव प्रचार और मतदान में होनेवाली परेशानी को देखते हुए उठाया होगा। चिलचिलाती गर्मी में लोकतंत्र का सबसे बड़ा उत्सव सबको भारी पड़ता है। हालांकि 2004 के बाद से मतदान बढ़ता जा रहा है जब चुनावी महीनों में तापमान भी ऊंचा होता है। लेकिन यह पता लगाने की जरूरत है कि क्या गर्मी बढ़ने से वोटिंग पर भी नकारात्मक असर पड़ता है? बहरहाल जब अटल बिहारी वाजपेयी सवाल कर रहे थे तब गर्मी का ऐसा सितम नहीं था जैसा अब बढ़ता जा रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण अब धरती का तामपान बढ़ रहा है और साल दर प्रकृति के मन मिजाज में गर्मी आ रही है। इस साल तो वैसे भी अल नीनो का असर है इसलिए सर्दियों ने जहां सितम किया वहीं गर्मी भी अप्रैल के पहले पखवाड़े में ही 40 डिग्री तक पहुंच गयी है। मौसम विभाग का अनुमान है कि इस साल गर्मी रिकार्ड कायम करेगी। मार्च के महीने में ही वैश्विक स्तर पर औसत गर्मी में 1.68 डिग्री सेल्सियस की बढ़त दर्ज की जा चुकी है। अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों का कहना है कि यह पहली बार हो रहा है कि वैश्विक स्तर पर तापमान में लगातार 1 डिग्री सेल्सियस से अधिक की बढ़त दर्ज गयी है। धरती का यह बढ़ता तापमान जलवायु परिवर्तन का असर है जिसके कारण पूरी धरती के अस्तित्व पर ही संकट के बादल मंडरा रहे हैं। जल, जीवन सब पर इसका नकारात्मक असर हो रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण न सिर्फ खेती किसानी को नुकसान हो रहा है बल्कि सामान्य व्यक्ति के लिए जीवन जीने में तरह तरह का संकट पैदा हो रहा है। जलवायु परिवर्तन के खतरे बहुत हैं लेकिन न तो यह आम आदमी के लिए कोई मुद्दा है और न ही सरकारों या कारोबारियों के लिए चिंता का विषय। जिस विकास के कारण मानव जीवन, प्रकृति, पर्यावरण और समूचे जीव जगत पर यह संकट मंडराया है उसे सीमित करने या उसको पर्यावरण अनुकूल बनाने के प्रयास सिर्फ रस्म अदायगी भर हैं। वैश्विक स्तर पर कुछ एनजीओ हैं जो पर्यावरण को रहे नुकसान पर चिंता व्यक्त करते हैं। वो भी इसलिए क्योंकि इस चिंता को व्यक्त करने के लिए उन्हें पैसा मिलता है। यह पैसा उन्हें वो लोग देते हैं जो उस बिजनेस लॉबी के विरोध में अपना नया %ग्रीन बिजनेस% खड़ा करना चाहते हैं जिसके कारण पर्यावरण को नुकसान हो रहा है। ऐसे में एनजीओ द्वारा व्यक्त की जानेवाली चिंताओं या प्रयासों का कोई खास असर समाज पर होता नहीं। लोगों को यही लगता है कि यह तो एनजीओ का धंधा है, और वो अपना धंधा कर रहे हैं। फिर सवाल आता है सरकारों का कि वो इस पर्यावरणीय बदलाव को रोकने के लिए क्या प्रयास कर रही हैं। यहां से यह मुद्दा राजनीतिक रूप लेता जरूर है लेकिन भारत जैसे देश में सिर्फ सरकार के स्तर पर ही इसकी चर्चा होती है। अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में यहां के सरकारी प्रतिनिधि जाते हैं और अपनी बात कहकर वापस आ जाते हैं। मसलन अभी पिछले साल दिसंबर में प्रधानमंत्री मोदी कॉप 28 में शामिल होने यूएई गये थे। वहां उन्होंने कहा कि अपने हेल्थ कार्ड की तरह प्रकृति के हेल्थ कार्ड के बारे में भी सोचने का समय आ गया है। वादे और दावे चाहे जितने बड़े बड़े किये जाएं लेकिन सच्चाई यह है कि ऐसे देशी विदेशी सम्मेलनों से जनता को कोई खास मतलब होता नहीं है। वह सिर्फ भुक्तभोगी होती है। जिन वैश्विक नीतियों के कारण पर्यावरण के सामने संकट पैदा हुआ है न तो उसको निर्धारित करने में उसकी कोई भूमिका होती है और न ही उसे यह महसूस होता है कि इन नीतियों के कारण उसका जीवन किस प्रकार प्रभावित हो रहा है। भारत और चीन जैसे देश में जहां आर्थिक विकास ही इस समय इकलौता विकास बन गया है वहां अधिक से अधिक औद्योगिक माल खरीदकर संपन्न होने का दिखावा करना ज्यादा महत्वपूर्ण मुद्दा है। इसलिए नेता वैश्विक मंचों से पर्यावरण बचाने की चाहे जो आवाज दें लेकिन जब देश में आते हैं और चुनाव में जाते हैं तो उसी औद्योगिक आर्थिक विकास का वादा करते हैं जिसके कारण पर्यावरण और हर जीव के सामने अस्तित्व का संकट खड़ा हुआ है। भारत जैसे देश में शहरी जीवन का आकर्षण इतना अधिक बढ़ा है कि गंदे से गंदे पर्यावरणीय माहौल में हम रहने के लिए तैयार हैं।

ऊंची उड़ान भरते विमानन क्षेत्र में विस्तारा जैसी चुनौतियां

विस्तारा एयरलाइन के इस फैसले के बाद कि वह अपनी 300 में से 125 उड़ानें निरस्त कर रहा है, भारतीय उड्डयन क्षेत्र की कमजोरी ही उजागर हुई है। कंपनी का कहना है कि पायलटों की कमी के कारण उसे ऐसा करना पड़ा है, लेकिन वास्तव में पायलटों के अचानक बड़ी संख्या में 'छुट्टी' पर चले जाने के कारण यह समस्या पैदा हुई है। इस पूरे मसले की जड़ में टाटा ग्रुप का वह फैसला है कि वह अपने आधिपत्य वाली दोनों विमानन सेवाओं (विस्तारा और एअर इंडिया) का विलय करेगा। पायलट इसलिए विलय नहीं चाहते, क्योंकि विस्तारा प्रीमियम एयरलाइन मानी जाती है, जबकि सरकारी संरक्षण में होने और घाटे में रहने के कारण एअर इंडिया की छवि बहुत अच्छी नहीं है। एक अन्य वजह, विस्तारा के पायलटों के वेतन-भत्ते में कटौती की आशंका भी है। विश्व में आमतौर पर एक पायलट को महीने में 70 से 80 घंटे तक की फ्लाइट दी जाती है। विस्तारा के पायलट भी करीब 70 घंटे औसतन हवाई जहाज उड़ाते रहे हैं, लेकिन अब उन्हें डर है कि विलय के बाद उनका 'फ्लाइट आवर' 40 घंटा किया जा सकता है, जिससे उन्हें प्रति माह एक से डेढ़ लाख रुपये तक का नुकसान उठाना पड़ सकता है। भारत में विमानन क्षेत्र की तस्वीर साल 2003-04 के उस फैसले के बाद बदली है, जब वाजपेयी सरकार ने उड्डयन क्षेत्र के निजीकरण का निर्णय लिया। इसकी शुरुआत हवाई अड्डों से की गई और उनको विमानपत्तन प्राधिकरण से निकालकर निजी हाथों को सौंप दिया गया। इसके अच्छे परिणाम सामने आए। साल 2011-12 तक नई दिल्ली का इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा तो दुनिया के बेहतरीन हवाई अड्डों में शुमार हो गया था। यही कारण रहा कि मोदी सरकार ने भी 27 हवाई अड्डों के निजीकरण की नीति अपनाई। आलम यह है कि देश के कई हवाई अड्डे यात्री सुविधा, कमाई, सेवा आदि के मामले में अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। अब तो घरेलू उड़ान के मामले में भी भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा देश बन गया है। हमसे ऊपर सिर्फ चीन और अमेरिका हैं। देश में विमानन क्षेत्र का विकास इससे भी पता चलता है कि कारोबार व बाजार पर शोध करने वाली प्रसिद्ध संस्था 'मोर्डोर इंटेलिजेंस' के अनुसार, भारत का विमानन क्षेत्र अगले पांच-छह वर्षों में दोगुना हो जाएगा। फिलहाल यह करीब 14 अरब डॉलर का क्षेत्र है, जिसके 2030-31 तक 28 अरब डॉलर का होने का अनुमान है। इतना ही नहीं, आंकड़े ये भी हैं कि 2017 में करीब 14 करोड़ लोगों ने हवाई जहाज से यात्रा की थी, जो 2023 तक बढ़कर 26 करोड़ को पार कर गया था। माना जा रहा है कि 2030 तक सालाना 46 करोड़ यात्री हवाई यात्रा करेंगे। यानी, यात्रियों की संख्या के मामले में प्रति छह वर्ष में लगभग 40 फीसदी की वृद्धि हो रही है। हालांकि अब भी कुछ चुनौतियां हैं। सबसे बड़ी बाधा 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' है, यानी इस कारोबारी क्षेत्र को आसान बनाने की जरूरत है। इस पर सरकारी तंत्र का शिकंजा कम हुआ है, फिर भी यह अब तक अंतरराष्ट्रीय स्तर का नहीं हो सका है। इतना ही नहीं, अधिकतर हवाई अड्डे महानगरों और बड़े शहरों में हैं। घरेलू उड़ानों को बढ़ाने के लिए जरूरी है कि छोटे शहर भी हवाई सेवा से जुड़ें। तीसरी बड़ी बाधा 'लास्ट माइल कनेक्टिविटी' की है, यानी यात्री हवाई अड्डे से अपने घर तक कैसे जाए? एक बाधा आतंकवाद और उससे संबंधित सुरक्षा व्यवस्था की भी है। यूरोप के अनेक देशों में, विशेषकर नोर्डिक देशों में कोई यात्री हवाई जहाज के पास तक बिना किसी सुरक्षा जांच के जा सकता है, लेकिन हमारे देश में श्रीनगर जैसे एयरपोर्ट पर हवाई अड्डे से करीब दो-ढाई किलोमीटर दूर ही पूरे सामान की एक बार स्कैनिंग होती है, फिर हवाई अड्डे पर उसे दोबारा जांचा जाता है। देश में उड्डयन क्षेत्र से जुड़े विषयों के प्रशिक्षण के लिए अच्छे संस्थानों की कमी है, विश्वविद्यालय तो दूर की बात है।

सुडोकू पहेली क्रमांक- 5208

		7				9		8
	3		1	7				4
					6			
6	9	8	7	4		3		
		3		1		4		
		1		3	9	7	6	2
			4					
9				5	1		4	
4		5				1		

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5207

2	9	6	1	4	5	8	3	7
3	5	7	8	2	6	1	4	9
1	4	8	9	3	7	5	2	6
6	3	9	5	1	2	4	7	8
5	8	1	7	6	4	3	9	2
4	7	2	3	9	8	6	1	5
9	6	4	2	8	3	7	5	1
8	1	5	4	7	9	2	6	3
7	2	3	6	5	1	9	8	4

वर्ग पहेली 5208

संकेत: बाएं से दाएं

ऊपर से नीचे

2. नीचे वाला भाग, तल, स्तर (2)
5. गीत, तराना (3)
6. पूजा करने वाला (3)
19. त्वचा, चमड़ी (2)
20. महत्व, गरिमा, महिमा (4)

वर्ग पहेली 5207 का हल

आज का राशिफल

मेष

वृषभ

मिथुन

कर्क

सिंह

कन्या

तुला

वृश्चिक

धनु

मकर

कुंभ

मीन

धर्मधाम गीता भवन में रामनवमी पर भगवान श्री राम जन्म की दिव्य आरती

मंदसौर, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। धर्मधाम गीता भवन में श्रीराम नवमी व पावन अवसर पर भगवान श्रीराम की जन्म दिव्य आरती बुधवार को दिन में 12 बजे सम्पन्न हुई।

धर्मधाम गीता भवन के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी श्री रामनिवासजी महाराज के मार्गदर्शन में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी राम नवमी की दिव्य आरती में श्रद्धालुजनों ने भाग लिया। इस अवसर पर धर्मधाम गीता भवन ट्रस्ट के उपाध्यक्ष श्री जगदीश चौधरी, सचिव पं. अशोक त्रिपाठी, वरिष्ठट्रस्टी श्री बंशीलाल टांक के अलावा श्री ओम चौधरी, जयप्रकाश तिवारी, सत्यनारायण सोमानी, शुभेन्द्रसिंह, अभय कुमार, रामहित प्रजापति, सुरेश राउत्त, रानू सहित अन्य महानुभाव ने भाग लिया। गीता भवन के पुजारी पं. अभिषेक शर्मा ने आरती, श्री राम स्तुति करवाई। श्रद्धालु माता बहनों में प्रमुख रूप से श्रीमती विद्या राजेश उपाध्याय, अयोध्या बैरागी, श्रीमती कृष्णा बैरागी, श्रीमती उषा चौधरी, संतोषबाई, कंचनबाई पोरवाल, अंगूरबाला, पार्वती पोरवाल, नीलमबाई, कविता बाई, पार्वतीबाई, पुष्पा सोनी, शांतिबाई देवडा, हेमाकुंवर गेहलोत, शांतिबाई चंदेल, कौशल्याबाई पंवार आरती में भाग लिया तथा आरती के पश्चात् प्रसाद वितरण के बाद श्री राम लला के जन्मोत्सव की बधाईयां भजन के रूप में गाई। आभार प्रदर्शन ओम चौधरी ने माना।

गुप्ता ने जावरा विधानसभा के ग्रामों में जनसंपर्क किया

मंदसौर, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। विकसित भारत बनाने के लिए भाजपा सरकार प्रतिबद्ध है और विकसित भारत का संकल्प तभी पूरा होगा जब युवा, किसान, महिला और गरीबों को विकास होगा। इसके लिए मोदी सरकार कार्य कर रही है। इन चार स्तंभो के सर्वांगीण विकास से ही एक दिन भारत विश्व गुरु बनेगा। उक्त बात सांसद सुधीर गुप्ता ने जावरा विधानसभा के नगर एवं मंडल के ग्रामों में जनसंपर्क के दौरान कही।

बुधवार को भाजपा प्रत्याशी सुधीर गुप्ता ने जावरा विधानसभा के जावरा नगर एवं ग्राम कलालीया, रिंगनोद, गोठडा, कामलिया, बनवाडा, बिनोली, आलमपुर ठिकरीया, वण्डवा, उग्गी, नयानगर, खेडाखेडी, मीना खेडा, आक्याबेडी, बहादुरपूर, लालाखेडा में जनसंपर्क एक बार फिर मोदी सरकार बनाने की अपील की।

सुधीर गुप्ता ने कहा कि भाजपा सरकार विकास के साथ-साथ सनातन संस्कृति को भी आगे बडा रही है। हमने दूसरी सरकारों के कार्यकाल में टेंट में भी राम देखे है लेकिन मोदी सरकार ने भव्य राम मंदिर का निर्माण कराकर भक्तों से किया हुआ वादा पूरा किया। उन्होने कहा कि ने जो कहा करके दिखाया। यह मोदी सरकार की दृढ प्रतिज्ञा थी। उन्होने क्षेत्र के विकास को लेकर कहा कि देश का सबसे बडी सडक दिल्ली मुम्बई एक्सप्रेस वे आपके क्षेत्र से गुजर रही है जिसके बाद यहा रोजगार के अवसर तो बडेंगे साथ ही क्षेत्र का आर्थिक विकास भी होगा। जावरा-उज्जैन फोरलेन 2 हजार करोड की माही जलसमूह प्रदाय योजना से क्षेत्र के नागरिकों को पेयजल हेतु पानी उपलब्ध होगा। संसदीय क्षेत्र में 90 हजार से अधिक आवासो का निर्माण हुआ आगे भी मोदी सरकार यह योजना जारी रखेगी और वंचितों को आवास योजना का लाभ मिलेगा। इसी के साथ ही क्षेत्र में तीन पीएमश्री स्कूल की सौगात मिली तो रेलवे का दोहरीकरण और विद्युतीकरण का कार्य हुआ और स्टेशनों का आधुनिकीकरण हो रहा है। विधायक राजेन्द्र पांडे ने कहा कि मोदी सरकार के नेतृत्व में सांसद सुधीर गुप्ता के प्रयासो से क्षेत्र को कई उपलब्धियां मिली। हर क्षेत्र में हर वर्ग के लिए कार्य हुआ। आने वाली 13 मई को एक बार फिर हमें हर घर कमल खिलाना है। इसके लिए कार्यकर्ताओं को भी घर-घर जाकर सरकार योजनाओं की जानकारी आमजन तक पहुंचाएं। इसी के साथ ही भाजपा के वरिष्ठ पदाधिकारी, मोर्चा, मंडल के पदाधिकारी, कार्यकर्तागण एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

रामनवमी के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों में सहभागिता की- सांसद सुधीर गुप्ता ने रामनवमी के पावन अवसर पर प्रात: अम्बे माता मंदिर दर्शन कर आशीर्वाद लिया और कन्या पूजन किया। इसके पश्चात वसीठा धोबी समाज द्वारा आयोजित शोभायात्रा में शामिल होकर समाजजनों को बधाई शुभकामना दी।जावरा नगर में बजरंग दल एवं हनुमान चालीसा समिति द्वारा आयोजित धर्मसभा में शामिल होकर उपस्थित संतजनो का सम्मान किया। सांसद गुप्ता ने क्षेत्रवासियों को रामनवमी पर्व की बधाई दी।

श्री रामनवमी पर श्री कृष्ण गौशाला भालोट में गौरक्षा महोत्सव मनाया

मंदसौर, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। गांव भालोट में गौरक्षा महोत्सव के अन्तर्गत श्री रामनवमी पर श्री कृष्ण गौशाला भालोट में गौरक्षा महोत्सव मनाया गया। जिमसें पशुपालन विभाग द्वारा गौशाला प्रभारी शंभू सिंह कुशवाह व गजेंद्र फुकवाल श्री कृष्ण गौशाला में समिति द्वारा गौ माता की पुजन कर गुड व हरा चारा खीलाया एवं गौमाता में एलडी टिकाकरण करवाया गया। जिसमें निम्न गणमान्य सरपंच नानालाल जी मेगरीया राजु ढोला अध्यक्ष गोपाल गुगांवन सचिव, हर्ष कोठारी कोषध्यक्ष, अम्बालाल धनगर कोषाध्यक्ष, राकेश विश्वकर्मा सहा सवि सरद उपाध्यक्ष अरूण साहु, विनोद गोयल, दिनेश विश्वकर्मा आदि उपस्थित रहे। सचिव गोपाल गुगांवन द्वारा सरकार का आभार माना गया। इस कार्यक्रम में सभी ग्रामवासी उपथित थे।

बच्चों की प्रतिभा तराशने का बेहतरीन अवसर समर कैम्प

मंदसौर, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। गत वर्ष की सफलता और प्रतिभाओं को मिले अवसर का लाभ इस बार उठाने का मौका है । गुरुवार से अभिनंदन नगर , साई मंदिर के सामने सुविधा पूर्ण स्थान विबोध प्रीस्कूल प्रांगण में फन विथ लर्न के साथ समर कैम्प शुरू होरहा है । विबोध स्कूल डायरेक्टर अभिषेक बटवाल एवं प्रिंसिपल श्रुति बटवाल ने बताया कि 4 से 15 आयु वर्ग के बालक - बालिकाओं के लिए विशेष प्रशिक्षित कोचिंग में नृत्य , संगीत , शतरंज , फोनिक्स , चित्रकला , पेपर क्रॉफ्ट , मज़े के साथ विज्ञान कैलिग्राफी , दिमाग की कसरत व अन्य खेल गतिविधियों के साथ शाम के समय आरंभ किया जारहा है। आपने जानकारी देते हुए बताया कि सोनाली भारद्वाज (डांस) , चेतन व्यास (म्यूजिक) , नंदकिशोर जोशी (शतरंज) , श्रुति मेम (फॉनिक्स) , उमा खुतवाल (पेपर क्रॉफ्ट - ड्रॉइंग) दीप्ति जागरी (कैलिग्राफी -हैंड राइटिंग) आदि विशेष प्रशिक्षित कोच एक्टिविटी कराएंगे। इसके अलावा फन विथ साइंस , योगा मेडिटेशन , जुम्बा , ब्रेन एक्सरसाइज ,फन गेम्स गतिविधियां भी होंगी। शाम चार से सात बजे के सत्र में चार साल से पंद्रह साल आयु वर्ग के बच्चों का विबोध समर कैम्प में प्रवेश कराकर भविष्य की प्रतिभाओं को निखारने का शानदार अवसर है । डायरेक्टर अभिषेक बटवाल एवं प्रिंसिपल श्रुति बटवाल ने बताया कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए प्ले ग्रुप , नर्सरी , केजी कक्षाओं में नवीन सत्र प्रवेश प्रक्रिया चालू है। सुविधा युक्त और सुरक्षित वातावरण के साथ जागरूक अभिभावकों से विबोध स्कूल में प्रवेश की अपील की है।

टी20 विश्व कप में रोहित-कोहली करेंगे ओपनिंग

यशस्वी-गिल का कटेगा पत्ता? दुबे-पराग को लेकर भी हुई चर्चा

नईदिल्ली, 17 अप्रेल। आईपीएल 2024 के बाद वेस्टइंडीज-अमेरिका की सह-मेजबानी में टी20 विश्व कप खेला जाना है। इसको लेकर चर्चाओं का बाजार गर्म होता जा रहा है। हाल ही में एक रिपोर्ट सामने आई थी कि कुछ दिनों पहले टी20 विश्व कप की टीम के चयन को लेकर भारतीय टीम के हेड कोच राहुल द्रविड, मुख्य चयनकर्ता अजीत अगरकर और कप्तान रोहित शर्मा ने एक मीटिंग की थी। जैसे-जैसे संभावित स्क्वॉड के चयन को लेकर तारीख नजदीक आती जा रही है, वैसे-वैसे इस मीटिंग से जुडी रिपोर्ट्स भी सामने आने लगी हैं। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में यह दावा किया जा रहा है कि चयनकर्ता रोहित शर्मा के साथ विराट कोहली को ओपनिंग कराने पर भी विचार कर रहे हैं।

आईपीएल में विराट कर रहे शानदार बल्लेबाजी- रिपोर्ट्स के मुताबिक, अगरकर की अगुआई वाली चयन समिति कोहली को बतौर ओपनर टीम में शामिल करना चाहती है। इसको लेकर मीटिंग में काफी देर तक चर्चा हुई। टी20 विश्व कप के लिए टीम में कोहली के स्थान को लेकर पिछले काफी समय से चर्चा हो रही है। आईपीएल शुरू होने से पहले कुछ रिपोर्ट्स में यह बात भी सामने आई थी कि अगरकर उन्हें टीम से बाहर करने पर विचार कर रहे हैं और उन्हें किसी युवा खिलाडी के लिए अपना स्थान खाली करने को बोल रहे हैं। हालांकि, अब जब विराट मौजूदा आईपीएल में ऑरेंज कैप की रेस में सबसे आगे चल रहे हैं तो चयनकर्ताओं का मन बदला है और वह विराट को नए रोल में टीम में शामिल करने पर विचार कर रहे हैं।

कुछ युवा खिलाड़ियों पर गिर सकती है गाज- इस साल जनवरी तक तो कोहली और रोहित के टी20 अंतरराष्ट्रीय खेलने पर सस्पेंस था। हालांकि, जनवरी में अफगानिस्तान के खिलाफ टी20 सीरीज से दोनों ने इस प्रारूप में वापसी की। उस सीरीज में विराट के प्रदर्शन से चयनकर्ता खुश नहीं थे, लेकिन आईपीएल में विराट की बल्लेबाजी शानदार रही है। आईपीएल 2024 में विराट ने अपनी टीम के लिए ओपनिंग की और सात मैचों में 147 के स्ट्राइक रेट से 361 रन बना चुके हैं। अगर विराट ओपनिंग उतरते हैं तो कुछ युवा खिलाड़ियों पर गाज गिर सकती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, कोहली चयनकर्ता से टी20 विश्व कप में अपने स्थान को लेकर स्पष्टता चाहते थे। इसके बाद ही चयनकर्ताओं ने उनके सामने ओपनिंग की चुनौती रखी।

यशस्वी का कट सकता है पत्ता, गिल बैकअप ओपनर?- मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, अगर कोहली रोहित के साथ ओपनिंग के लिए उतरते हैं तो यशस्वी जायसवाल को टीम से बाहर या फिर रिजर्व में रखा जा सकता है। चयनकर्ता शुभमन गिल को बैकअप ओपनर के तौर पर रखने पर विचार कर रहे हैं। यशस्वी इस सीजन कुछ खास नहीं कर सके हैं और सात मैचों में 17.29 की औसत से 121 रन ही बना पाए हैं। वहीं, शुभमन का फॉर्म थोड़ा बेहतर रहा है। उन्होंने गुजरात टाइटंस की कप्तानी करते हुए बतौर ओपनर छह मैचों में 151.78 के स्ट्राइक रेट से 255 रन बनाए हैं। वह ऑरेंज कैप की रेस में छठे स्थान पर हैं। रोहित-कोहली के साथ ओपनिंग को लेकर चर्चा 2021 टी20 विश्व कप के समय से ही है, लेकिन कभी ऐसा नहीं हो सका। इस बार यह संभव होता नजर आ रहा है। ऐसा माना जा रहा है कि यह इन दोनों का आखिरी टी20 विश्व कप भी हो सकता है।

शिवम दुबे-रियान पराग के नामों पर चर्चा-अगर कोहली ओपनिंग करते हैं तो चौथे नंबर पर पावर हिटर्स के लिए एक स्थान खाली होगा। रिपोर्ट्स के मुताबिक चयनकर्ता इस स्थान पर शिवम दुबे या रियान पराग में से किसी एक को शामिल करने पर विचार कर रहे हैं। शिवम जहां पेस बॉलिंग ऑलराउंडर हैं, वहीं पराग आक्रामक बल्लेबाजी के साथ लेग स्पिन भी कर सकते हैं। इस सीजन आईपीएल में इन दोनों बल्लेबाजों ने कुछ बेहतरीन पारियां खेली हैं और शानदार फॉर्म में दिखे हैं। दोनों बडे हिट्स लगाने में माहिर हैं। असम के रियान ने सात मैचों में 161.42 के स्ट्राइक रेट से 318 रन बनाए हैं। वहीं, शिवम दुबे ने छह मैचों में 163.51 के स्ट्राइक रेट से 242 रन बनाए हैं। उन्होंने चेन्नई के लिए फिनिशर का रोल बखूबी निभाया है। हालांकि, रियान और शिवम दोनों ने इस सीजन गेंदबाजी नहीं की है, लेकिन जरूरत पड़ने पर वह उपयोगी साबित हो सकते हैं।

निर्वाचन संपन्न होने तक सभी अधिकारी-कर्मचारियों के अवकाश पर प्रतिबंध-कलेक्टर

मंदसौर, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री दिलीप कुमार यादव ने निर्वाचन कार्य के सुचारू रूप से संपादन के लिए अधिकारियों/कर्मचारियों की आवश्यकता तथा निर्वाचन के महत्व को देखते हुए समस्त शासकीय अर्द्धशासकीय व संविदा अधिकारी/कर्मचारियों के समस्त प्रकार के अवकाश पर निर्वाचन संपन्न होने पर प्रतिबंध लगाया है।

अनुभाग स्तर के तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के आकस्मिक अवकाश के समस्त आवेदन पत्रों का निराकरण संबंधित अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) अपने स्तर पर करेंगे। चिकित्सा अवकाश/अर्जित अवकाश/अति विशेष परिस्थिति से संबंधित आवेदन पत्रों को विभाग प्रमुख अपनी अनुशंसा के साथ मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत एवं नोडल अधिकारी मैनपावर मंदसौर को प्रेषित करेगें। समस्त सेक्टर अधिकारी अवकाश संबंधी आवेदन अपने संबंधित सहायक रिटर्निंग अधिकारी को प्रस्तुत करेगें। सहायक रिटर्निंग अधिकारी द्वारा सेक्टर अधिकारी के आवेदन पर निराकरण किया जावेगा। जिला कार्यालय प्रमुख के अवकाश व मुख्यालय छोडने की अनुमति संबंधी आवेदन एवं निर्वाचन कार्य में लगे नोडल अधिकारी/सहायक नोडल अधिकारी एवं मतदान दलों में नियत कर्मचारियों द्वारा अवकाश संबंधी आवेदन का निराकरण कार्मिक नोडल मुख्?य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत मंदसौर द्वारा किया जावेगा। चिकित्या अवकाश को छोडकर जो अधिकारी अवकाश पर है वे तत्काल अपने कर्तव्य पर उपस्थित हो।

निर्वाचन सम्पन्न होने तक जिले में ध्वनि विस्तारक यंत्रों के उपयोग पर रहेगा प्रतिबंध

मंदसौर, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। लोकसभा निर्वाचन 2024अवधि के दौरान कोलाहल पर नियंत्रण बनाए रखना लोकहित में आवश्यक है। इस संबंध में मध्यप्रदेश कोलाहल नियंत्रण अधिनियम 1985 की धारा 10 के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री दिलीप कुमार यादव ने जिला मंदसौर की परिधि में निर्वाचन सम्पन्न होने तक ध्वनि विस्तारक यंत्रों के उपयोग के संबंध में प्रतिबंधात्मक आदेश पारित किया है। निर्वाचन अवधि के दौरान ध्वनि विस्तार यंत्रों का उपयोग प्रतिबंधित रहेगा। निर्वाचन प्रचार के समय ध्वनि विस्तारक यंत्रों का उपयोग करने के लिए विधिवत अनुमति संबंधित अनुविभागीय दंडाधिकारी/कार्यपालक दंडाधिकारी से लेना होगी। सर्वोच्च न्यायालय निर्णित रिट पिटिशन (सिविल) क्रमांक 72/98 में ध्वनि प्रदूषण के नियंत्रण के संबंध में पारित आदेश दिनांक 18 जुलाई 2005 का पालन सुनिश्चित किया जाना होगा। ध्वनि विस्तारक यंत्रों के उपयोग हेतु ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में सुबह 6 से रात्रि 10 बजे तक की अवधि के लिए ही अनुमति प्रदान की जाएगी। अनुमति जारी करता अधिकारी, शासन द्वारा जारी किए गए दिशा-निर्देशों के अधीन स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार अनुमति देने या निरस्त करने के लिए सक्षम होंगे।

आदर्श आचरण संहिता के एक माह में 117 करोड़ से अधिक मूल्य की विभिन्न सामग्रियां जप्त

नीमच, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने बताया है कि लोकसभा निर्वाचन-2024 की आदर्श आचरण संहिता प्रभावशील होने के बाद पुलिस एवं अन्य एन्फोर्समेंट एजेंसियों द्वारा लगातार कार्रवाई की जा रही है। उन्होंने बताया कि 16 मार्च से 15 अप्रैल तक 18 करोड 30 लाख 13 हजार 224 रूपये नगद राशि सहित 117 करोड 97 लाख 15 हजार 39 रूपये मूल्य की विभिन्न सामग्री जब्त की गयी हैं। गौरतलब है कि लोकसभा निर्वाचन-2019 में आचरण संहिता के दौरान 85 करोड 12 लाख रूपये मूल्य की विभिन्न सामग्री जब्त की गयी थीं। लोकसभा निर्वाचन-2024 की आचरण संहिता अवधि में मात्र एक माह में ही गत लोकसभा निर्वाचन की तुलना में लगभग 32 करोड रूपये से अधिक मूल्य की विभिन्न सामग्री की जब्ती की जा चुकी हैं। गत 15 अप्रैल, 2024 तक जब्त सामग्री में 18 लाख 63 हजार 145 लीटर मदिरा भी जब्त की गयी है, जिसका मूल्य 28 करोड 38 लाख 11 हजार 595 रूपये है। इसी तरह 20 करोड 62 लाख 24 हजार 820 रूपये मूल्य के 15 हजार 467 किलोग्राम से अधिक ड्रग्स और 9 करोड 95 लाख 56 हजार 602 रूपये मूल्य की 468 किलोग्राम से अधिक कीमती धातुएँ भी जब्त की गई हैं। साथ ही 40 करोड 71 लाख 8 हजार 798 रूपये मूल्य की अन्य सामग्री भी जब्त की गई हैं।

शिकायत एवं जानकारी हेतु कंट्रोल रूम स्थापित

मंदसौर, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। लोकसभा निर्वाचन 2024 से संबंधित शिकायतों के लिए कार्यालय कलेक्टर भवन जिला मंदसौर के कक्ष क्रमांक 113 में जिला स्तरीय कन्ट्रोल रूम स्थापित किया गया है। कंट्रोल रूम का स्थानीय न. 07422-235440, 235425 है। इसके अतिरिक्त राज्य स्तरीय हेल्पलाइन न. 1950 पर भी संपर्क कर निर्वाचन संबंधी जानकारी ले सकते है, एवं शिकायत भी कर सकते है।

अनंतनाग में आतंकी हमला, एक की मौत

नईदिल्ली, 17 अप्रेल। कश्मीर घाटी के आनंतनाग जिले के बिजबिहाड़ा में आतंकियों ने एक गैर कश्मीरी नागरिक को निशाना बनाते हुए फायरिंग की। गोलीबारी के बाद आतंकी मौके से फरार हो गए। फायरिंग में एक शख्स गंभीर रूप से घायल हो गया, जिसकी पहचान बिहार निवासी राजू शाह के रूप में हुई है। घायल को इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया ले जाया गया है। जहां इलाज के दौरान उसने दम तोड दिया है। सुरक्षाबलों ने इलाके को घेर लिया है। जानकारी के अनुसार, इस साल अब तक गैर कश्मीरी लोगों पर यह तीसरा हमला है। इससे पहले 7 फरवरी को आतंकवादियों ने श्रीनगर शहर के हब्बा कदल इलाके में अमृतसर, पंजाब के रहने वाले एक श्रमिक अमृतपाल सिंह की गोली मारकर हत्या कर दी थी

स्व. अर्जुनसिंहजी राठौर की स्मृति में श्री कोल्ड तिराहे पर लगी प्याऊ

किन्नर गुरु अनीता दीदी, नपा अध्यक्ष श्रीमती रमा देवी गुर्जर के हाथों हुआ शुभारंभ

मंदसौर, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। श्री खाटू श्याम मंदिर के संस्थापक ठा. अर्जुनसिंह राठौर की पुण्य स्मृति में विगत दिनों राठौर परिवार द्वारा श्री कोल्ड के सामने जल मंदिर लगाया गया। जिससे भीषण गर्मी में प्यासे कंठ अपनी प्यास बुझा सके। जल मंदिर का शुभारंभ किन्नर गुरु अनीता दीदी और नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती रमादेवी गुर्जर के द्वारा किया गया।

इस अवसर पर श्री अर्जुन सिंह राठौर के पुत्र शैलेन्द्रसिंह राठौर ने कहा कि गर्मी में पेयजल अमृत के समान होता है। उनके पिता श्री अर्जुनसिंहजी राठौर जरूरतमंदों के सहयोग के लिये सदैव तत्पर रहते थे। उनकी स्मृति में यह सेवा कार्य किया जा रहा है। गत वर्ष महाराणा प्रताप बस स्टैंड पर प्याऊका निर्माण किया गया था। इसी कडी में हर वर्ष गर्मी के मौसम में आमजन की प्यास बुझाने हेतु शीतल पेयजल की प्याऊलगाने का लक्ष्य है। इस वर्ष भी यह प्याऊलगाई गई है। जो पूरे गर्मी के मौसम में संचालित रहेगी। इसी के साथ गाय के पानी पीने के 21 कुंडे, खाने के 21 कुंडे और पंछियों के पानी और खाने के 100 सकोरे

वितरित किए गए। इस अवसर पर बलवंत सिंह कोठारी, दशरथ सिंह चंद्रावत, अशोक शर्मा, सतीश नागर, दशपुर जागृति संगठन के अध्यक्ष देवेंद्र पुराणिक, बीएस सिसोदिया, रमेश चंद्र चंद्रे, राजाराम तंवर, सत्येंद्र सिंह सोम, गुरु एक्सप्रेस समाचार पत्र के सम्पादक आशुतोष नवाल, राजपाल सिंह परिहार, विवेक शर्मा, मनीष दादूपंथी, प्रवीण शर्मा, प्याऊका निर्माण करने वाले मनोज गेहलोद, मोहन गेहलोद सहित क्षेत्र के व्यवसायी उपस्थित थे।

लू से बचाव के लिए सावधानी बरतना जरूरी

पानी, छाछ व अन्य तरल पदार्थो का सेवन करें, लू(तापघात) से बचाव के लिए दिशा-निर्देश जारी

नीमच, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। गर्मी का मौसम प्रारम्भ हो गया है, अधिक तापमान के बदलाव से लू लगने की संभावना होती है। इसके साथ-साथ खाद्य व पेय पदार्थों कें दूषित होने की संभावनाऐं भी बढ जाती हैं। सीएमएचओ डॉ.एस.एस. बघेल ने बताया, कि लू(तापघात)से बचाव के लिए आमजन धूप व गर्मी से बचें। घर में हवादार, ठंडे स्थान पर रहें। बाहर जाना आवश्यक हो, तो सुबह व शाम के समय जाये। अत्याधिक शारीरिक श्रम वाली गतिविधियां अधिकतम तापमान वाले घंटों में न करें। सफेद व हल्के रंग के वस्त्रों का उपयोग करें, सिर को कपडे या टोपी से ढकें। जूते-चप्पल तथा नजर के काले चश्में का प्रयोग करें। धूप में जाने से पहले भोजन व पर्याप्त पानी पियें। पेय पदार्थों(नॉन अल्कोहॉलिक)जैसे नींबू पानी, लस्सी, छांछ, जलजीरा, आमपना, दही, नारियल पानी आदि का सेवन करें। ताजा एवं स्वच्छ भोजन का सेवन करें।

शिशुओं तथा बच्चों, 65 वर्ष से अधिक आयु के महिला व पुरूष घर के बाहर काम करने वाले, मानसिक रोगियों तथा उच्च रक्तचाप वाले मरीजों का विशेष ध्यान रखें। बंद गाडी के अंदर का तापमान बाहर से अधिक होता है। अत: किसी को बंद पार्किंग में रखी गाडी में अकेला न छोडें। बहुत अधिक भीड,गर्म,घुटन भरे कमरों,रेल,बस आदि में यात्रा गर्मी के मौसम में अत्यावश्यक होने पर ही करें। यदि किसी व्यक्ति को लू लगने का संदेह होता है, तो उसे तत्काल ठण्डे स्थान पर रखें। पानी, छांछ व अन्य तरल पदार्थों कों पर्याप्त मात्रा में ले। यदि आराम न लगे तो तुरंत निकट के अस्प ताल में चिकित्सपक को दिखाकर, उपचार लाभ लें।

लू से बचाव के लिए रखें सावधानी- जिले में गर्मी के मौसम में लू से बीमार होने की संभावना हो सकती हैं। ऐसे में हर नागरिक कि जिम्मेदारी है, कि वह अपने परिवार व स्वयं के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए लू से से बचे।

लू के प्रमुख लक्षण इस प्रकार है- गर्म लाल और सुखी आंखे होना, मतली या उल्टी आना, तेज सिरदर्द होना, मांश-पेशियो में कमजोरी व दर्द होना, साँस फूलना या दिल की धडकन तेज होना, घबराहट, चक्कर आना या बेहोशी, शरीर का तापमान 40 डिग्री सेल्सियस या इससे अधिक होना। यदि इस प्रकार के लक्षण दिखें, तो तुरंत नजदीकी शासकीय स्वास्थ्य केन्द्र में चिकित्सक को दिखाए और उचित उपचार लें।

लू से बचने के लिए यह सावधानिया रखें- धूप में जाते समय सफ़ेद या हल्के रंग के सूती वस्त्रद पहने, पानी एवं पेय पदार्थ का अधिक सेवन करें। ठन्डे मौसमी फल खाए, बुजुर्गो का खास ध्या,न रखें, सादा खाना और तरल पदार्थो का सेवन करें। गर्दन के पिछले भाग, कान और सिर को गमछे या तोलिये से ढक कर ही धूप में निकलें। रंगीन चश्मे व छतरी का उपयोग करें। तेज धूप के समय दोपहर 12 बजे से शाम 4 बजे तक हो सके, तो इनडोर रहें।

आज अधिसूचना जारी होने के साथ प्रारंभ होंगी नाम निर्देशन-पत्र जमा करने की प्रक्रिया-कलेक्टर

मंदसौर, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री दिलीप कुमार यादव ने नोटिफिकेशन के पश्चात नामांकन की प्रक्रिया प्रारंभ होने के संबंध में प्रेस वार्ता एवं स्टैंडिंग कमेटी की बैठक कर जानकारी प्रदान की। संसदीय क्षेत्र मंदसौर 23 के निर्वाचन के लिए 18 अप्रैल को अधिसूचना जारी होने के साथ ही नाम निर्देशन पत्र जमा करने की प्रक्रिया प्रारंभ होगी। नाम निर्देशन प्रक्रिया में रिटर्निंग अधिकारी के समक्ष केवल पांच व्यक्ति ही अभ्यर्थी सहित प्रवेश कर सकेगा। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री यादव ने बताया कि निर्वाचन आयोग के निर्देशों के तहत नाम निर्देशन पत्र जमा करने की प्रक्रिया आरंभ की जाएगी। जिसके तहत समस्त प्रकार के अवकाश छोड़कर नाम निर्देशन पत्र जमा होंगे।उन्होंने बताया कि अभ्यर्थी सार्वजनिक सूचना के दिवस को ही या नामांकन दाखिल करने के नियत किन्हीं आगामी दिवसों को, जो सार्वजनिक अवकाश दिवस नहीं हो, अपना नामांकन पत्र प्रस्तुत कर सकेंगे। मंदसौर संसदीय क्षेत्र के लिए नाम निर्देशन की प्रक्रिया 18 अप्रैल से 25 अप्रैल तक चलेगी। 26 अप्रैल के दिन स्क्रुटनी का कार्य होगा। अभ्यर्थी 29 अप्रैल तक नाम वापिस ले सकता है। 13 मई मतदान एवं 4 जून को मतगणना होगी। जिला निर्वाचन अधिकारी श्री दिलीप कुमार यादव ने बताया कि लोकसभा निर्वाचन 2024 के तहत नाम निर्देशन जमा करने के लिए नए कलेक्टर भवन के कक्ष कलेक्टर न्यायालय में नाम निर्देशन पत्र जमा होंगे जहां केवल पांच व्यक्ति अभ्यर्थी सहित प्रवेश कर सकेंगे।

चौथे चरण के लिए आज से भरे जायेंगे नाम निर्देशन-पत्र

नीमच, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने बताया है कि लोकसभा निर्वाचन - 2024 के तहत मध्यप्रदेश में 4 चरणों में लोकसभा चुनाव होने हैं।

श्री राजन ने बताया कि चौथे चरण में मध्यप्रदेश के 8 लोकसभा क्षेत्रों में 18 अप्रैल से नाम निर्देशन-पत्र भरे जायेंगे। उन्होंने बताया कि चौथे चरण में लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र क्रमांक- 21 देवास (अजा), क्रमांक-22 उज्जैन (अजा), क्रमांक-23 मंदसौर, क्रमांक-24 रतलाम (अजजा), क्रमांक-25 धार (अजजा), क्रमांक-26 इंदौर, क्रमांक-27 खरगौन (अजजा) एवं क्रमांक-28 खण्डवा में मतदान कराया जायेगा। चौथे चरण के लिए निर्वाचन की अधिसूचना गुरूवार, 18 अप्रैल को जारी होगी। प्रत्याशियों द्वारा इसी दिन से नाम निर्देशन-पत्र दाखिल किये जाएंगे। नाम निर्देशन-पत्र दाखिल करने की अंतिम तिथि गुरूवार, 25 अप्रैल है। इसके अगले दिन शुक्रवार, 26 अप्रैल को नाम निर्देशन-पत्रों की संवीक्षा की जाएगी। नाम निर्देशन-पत्र भर चुके प्रत्याशी सोमवार, 29 अप्रैल तक अपने नाम वापस ले सकेंगे। चौथे चरण के लिए सोमवार, 13 मई को मतदान होगा। सभी चरणों में हुये मतदान की मतगणना मंगलवार, 4 जून को होगी।

लूटकांड के बाद चोरों ने पुलिस को अब उनके घर में चुनौती दी...

पुलिस थाना के हनुमान मंदिर दान पात्र से रूपये चोरी

सुवासरा, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। नगर में मंगलवार बुधवार दरमियान रात्रि में अज्ञात चोर ने दो मंदिरों के दानपत्रो को निशाना बनाया। पहला मामला कृषि उपज मंडी परिसर स्थित हनुमान मंदिर का है जहां से चोर में पहले दान पात्र को मंदिर से उठाया और मंडी के बाहर लाकर उसका ताला तोड़कर राशि निकाल ली और दान पात्र वहीं फेक दिया। दूसरा मामला थाना परिसर में स्थित बालाजी मंदिर से चोर ने दान पात्र को उखाड़ कर वारदात को अंजाम दिया। नगर में हुई इन दोनो चोरियो से जहां चोरों के हौसले बुलंद हे वहीं आम जन में भय का माहोल निर्मित हो गया। क्योंकि 13 दिन पहले पुलिस थाने से 500 मीटर की दूरी पर एक कियोस्क संचालक से लूट की वारदात हुई थी। और अब थाना परिसर में ही अज्ञात चोर ने वारदात कर पुलिस को ठेंगा दिखा दिया। चोरी के दोनो ही मामले में अभी कोई प्रकरण दर्ज नहीं हुआ। जानकारी के मुताबिक कृषि उपज मंडी बालाजी मंदिर समिति लगभग 15 हजार रुपए की राशि चोरी होने की बात कर रहे हे वहीं पुलिस थाना परिसर मंदिर में दान पात्र पुलिस विभाग की निगरानी में खुलता हे। पुलिस के अनुसार रोजाना दान पात्र को खोला जाता हे। इसके साथ ही पुलिस ने थाना परिसर में लगे सीसीटीवी फुटेज में वारदात को देख किसी विक्षिप्त व्यक्ति के होने की संभावना जता रही हे। थाना परिसर मंदिर में प्रतिदिन भजन कीर्तन और दर्शन करने वाले की बड़ी संख्या रहती है। ऐसे में दान पात्र में अच्छी राशि हो सकती थी। चार महीने पहले दान पात्र खोला गया था। अब पुलिस कह रही हे रोजाना दान पात्र खोला जाता हे। जबकि ऐसा संभव नही है। वहीं कियोस्क संचालक के साथ हुई लूट में पुलिस के हाथ अभी भी खाली है।

इनका कहना

पुलिस थाने में हुई चोरी में दान पात्र खाली था। उसमे से दो दिन पहले ही पूजन सामग्री लाने के लिए दान पात्र खोला था। अज्ञात चोर ने दान पात्र भी परिसर में ही छोड़ दिया। सीसीटीवी फुटेज देखे हे किसी विक्षिप्त व्यक्ति की होने की संभावना हे। जांच चल रही है।

हेमलता कुरील, एएस पी गरोठ

कांग्रेस प्रत्याशी गुर्जर 25 को करेगे नामांकन दाखिल

पायलट, पटवारी, मीनाक्षी सहित कई नेता करेगे भागीदारी

मंदसौर, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। कांग्रेस के लोकसभा प्रत्याशी एवं पूर्व विधायक श्री दिलीपसिंह गुर्जर आगामी 25 अप्रेल को नाम निर्देशन पत्र दाखिल

करेगे। जिला कांग्रेस कार्यालय गांधी चौराहा मंदसौर पर दोपहर 12 बजे सभा एवं उसके उपरांत रैली में राजस्थान के पूर्व उप मुख्यमंत्री एवं कांग्रेस नेता सचिन पायलट, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष, जीतु पटवारी एवं पूर्व सांसद मीनाक्षीजी नटराजन सहित कई प्रमुख नेतागण भागीदारी करने मंदसौर आयेगे।

जिला कांग्रेस अध्यक्ष एवं विधायक श्री विपिन जैन ने बताया कि कांग्रेस प्रत्याशी श्री गुर्जर द्वारा निरंतर ग्रामीण क्षेत्रो का जनसंपर्क जारी है। इसके साथ ही आगामी 25 अप्रैल को होने वाली नामांकन सभा एवं रैली के लिये भी कांग्रेस संगठन की ओर से तैयारियां प्रारंभ कर दी गयी है। 25 अप्रैल को जिला मुख्यालय पर संपूर्ण संसदीय क्षेत्र से कांग्रेसजन पूर्व उप मुख्यमंत्री एवं कांग्रेस नेता श्री सचिन पायलट, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री जीतु पटवारी, पूर्व सांसद मीनाक्षी जी नटराजन के मार्गदर्शन में होने वाली नामांकन सभा एवं रैली में भागीदारी करने मंदसौर आयेगे। अत: समस्त क्षेत्र के कांग्रेस संगठन पदाधिकारियो एवं आम कांग्रेसजनो से अपील है कि अधिक से अधिक संख्या में श्री दिलीपसिंहजी गुर्जर के नामांकन सभा एवं रैली मे भागीदारी करने के लिये मंदसौर पधारे।

मजदूर ने लगाया पिपलिया चौकी पुलिस पर मकान तोड़ने, मारपीट करने व रिश्वत लेने का आरोप

पिपलियामंडी, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। गांव काचरिया चन्द्रावत के एक मजदूर ने पुलिस पर एक मकान तोड़ने, मारपीट करने व रिश्वत लेने का आरोप लगाया, जबकि चोकी प्रभारी का कहना है आरोप गलत है। काचरिया चन्द्रावत निवासी विजय पिता ओमप्रकाश बावरी ने बताया कि मैं ड्राइवर हूं, मजदूरी पर बाहर गया था, मंगलवार को दोपहर घर पर आया तो मेरी मां इंदिराबाई ने मुझे बताया कि मंगलवार सुबह 4 बजे पिपलियामंडी चोकी पुलिस का वाहन गांव पहुंचा, पुलिस अधिकारी व पुलिसकर्मियों ने दरवाजा खटखटया, लेकिन परिवारजन पीछे कमरे में सोए थे, आवाज नही आई तो पुलिस ने दरवाजा व आगे की दिवार तोड दी। बाद में पूरे घर की तलाशी ली व तोड़फोड़ की। पुलिस अधिकारी व कर्मचारी कौन थे, यह नही पता। विजय ने बताया कि जब दोपहर मैं व मेरा भाई अजय पिपलिया पुलिस चोकी गए तो वहां हमारे साथ मारपीट की व मेरे भाई विजय को पुलिस चोकी में बंद कर दिया। बाद में 2 हजार रुपए रिश्वत लेने के बाद मेरे भाई अजय को छोड़ा। विजय ने बताया कि अगर कोई मामला था तो पुलिस मोबाइल पर बात कर सकती थी, घर पर तोड़फोड़ करना कहां तक उचित है ? पुलिस से हमने तोड़फोड़ करने के बारे में पूछा तो पुलिस अधिकारी का कहना था, पुलिस कुछ भी कर सकती है। विजय ने तोड़फोड़ करने वाले पुलिस अधिकारी व कर्मियों पर कार्रवाई की मांग की।

आरोप गलत:– आरोप को लेकर चोकी प्रभारी कपिल सोराष्ट्रीय का कहना है पुलिस किसी का घर नही तोड़ती है, एसा कोई मामला नही है। आरोप गलत है।

नव दिवसीय रामकथा का आयोजन सम्पन्न

नाहरगढ़, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। मंशापूर्ण महादेव मंदिर व बड़ वाले बालाजी मंदिर राम मोहल्ला पर नवरात्रि के पर्व पर नव दिवसीय भव्य संगीतमय रामकथा का आयोजन हुआ । जिसमें रामचरितमानस रामकथा के मर्मज्ञ कथा प्रवक्ता पंडित राधेश्याम व्यास द्वारा कथा में रामकथा कलयुग में अमृत के समान है। रामकथा का महात्म्य व राम नाम का महत्व सती प्रसंग ,शिव पार्वती विवाह,श्री राम जन्म कथा ,धनुषयज्ञ प्रसंग ,परशुराम जी प्रसंग,सीताराम विवाह प्रसंग, भगवान का वन गमन, भरत जी का चरण पादुका लाना ,अत्रि मुनि सती अनुसूइया प्रसंग ,सूपनखा प्रसंग ,खर दूषण वध व बाली सुग्रीव प्रसंग, लंका दहन व रावण कुंभ करण, मेघनाद वध व विभीषण को राज्य व रामराज्यभिषेक की कथा का श्रवण करवाया गया। बड़ी संख्या में कथा श्रवण करने वाले श्रोता भाव विभोर हो गए। कथा यजमान राजू गाजवा ,प्रीतेश पालीवाल, लोकेश पालीवाल, राजेश पालीवाल ,जितु जाट, गोपाल पांडे, अंशुल पंडया, अनूप पंड्या, श्याम पांडे ,राम जी, आशीष सोनी, माणकलाल पालीवाल, प्रतिभा भट्ट, राजेश सोनी, टीटू सोनी, प्रियांशी जोशी व राम मोहल्ला के मंदिर आयोजक समिति के सभी सदस्यों का योगदान सराहनीय रहा। रामनवमी के अवसर पर कथा प्रवक्ता राधेश्याम व्यास ,संगीतकार उमाशंकर पुरोहित, गोपाल बैरागी का शाल श्री फल वस्त्र दान दक्षिणा समिति द्वारा प्रदान किया गया। हवन व खीर व खिचड़ी के प्रसाद व कन्या पूजन भोजन का आयोजन किया गया।

मतदाता जागरूकता के तहत पोस्टर प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

मंदसौर, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री दिलीप कुमार यादव एवं स्वीप नोडल एवं सीईओ जिला पंचायत श्री कुमार सत्यम के निर्देशन में जिले में मतदाता जागरूकता की विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जा रही है।इसके अंतर्गत गांव- गांव में मतदाताओं को जागरूक करने के लिए पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है एवं मतदान करने के लिए प्रेरित किया गया। संदेश के रूप में हम सब वोट करेंगे, वोट देंगे। इस प्रकार के संदेश भी लिख रही है। यह कार्य महिला बाल विकास विभाग के माध्यम से आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं एवं सहायिकाओं के द्वारा किया जा रहा है। इस कार्य में मतदाताओं के द्वारा भी विशेष रूचि ली जा रही है। साथ ही सभी लोग आपस में जागृत हो रही रहे हैं, और अन्य लोगों को भी जागरूक कर रहे हैं।

ससुर पर मारपीट का प्रकरण दर्ज

पिपलियामंडी, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। आर्मी जवान की पत्नी ने ससुर के खिलाफ मारपीट की शिकायत दर्ज कराई। आक्याबिका निवासी रेखाबाई पति कमलेश धनगर ने नारायणगढ थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि पति ड्यूटी पर रहते है। ससुर रामदयाल घरेलू कामों को लेकर गाली-गलौज करते है। मंगलवार को रात्रि में मुझे गालियां दी व लकड़ी से पीटा। पुलिस ने रामदयाल के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया।

हनुमान जन्मोत्सव पर 22 को निकलेगा चल समारोह, 23 को होंगे विभिन्न कार्यक्रम

नीमच, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। ग्वालटोली में हाइवे रोड पर स्थित दक्षिणमुखी व चमत्कारिक श्री विराट विराय मारुति नंदन बालाजी मंदिर का जीर्णोद्धार युद्ध स्तर पर जारी है। यहाँ मंदिर समिति द्वारा जन सहयोग से लगभग 1 करोड़ 11 लाख रुपए की लागत से भव्य एवं कलात्मक मंदिर का निर्माण किया जा रहा है, जिसमें भक्तगण का सहयोग भी भरपूर मिल रहा है। इसी बीच मंदिर पर आगामी श्री हनुमान जन्मोत्सव भव्य रूप से मनाने की रूपरेखा मंदिर समिति द्वारा तैयार की गई है। श्री विराट विराय मारुति नंदन बालाजी मंदिर, ग्वालटोली पर इस बार 18 वां श्री हनुमान जन्मोत्सव दो दिवसीय आयोजन के साथ 22 एवं 23 अप्रैल को मनाया जायेगा, जिसकी तैयारियां अंतिम दौर में चल रही है।

श्री विराट विराय मारुति नंदन बालाजी मंदिर समिति (रजि.) के अध्यक्ष गोविंद सफा एवं मीडिया प्रभारी श्रवण शर्मा 'राज' ने बताया कि मंदिर समिति द्वारा भक्तगण के सहयोग से यह 18 वां श्री हनुमान जन्मोत्सव मनाया जाएगा, जिसमें 22 अप्रैल को क्षेत्र में विशाल चल समारोह निकलेगा, जिसमें अखाड़ा, ढोल पार्टी, श्रीराम दरबार की आकर्षक झाँकी सहित अन्य लाव लश्कर के साथ श्री बालाजी महाराज क्षेत्र का भ्रमण करेंगे। चल समारोह मंदिर परिसर से सायं 6 बजे प्रारम्भ होगा, जो ग्वालटोली के विभिन्न गली-मोहल्लों से होता हुआ पुन: बालाजी मंदिर पर पहुँचकर सम्पन्न होगा। मंदिर पर 23 अप्रैल को श्री हनुमान जन्मोत्सव मनाया जायेगा, जिसके अन्तर्गत प्रात: 5.30 बजे से राम धुन प्रभातफेरी निकलेगी। 9 बजे से मंदिर पर हवन, महायज्ञ, दोपहर 12 से 3 बजे तक विशाल भण्डारा आयोजित किया जाएगा। इसी के साथ दोपहर 12 बजे से भव्य सुन्दर काण्ड पाठ भी होगा। रात्रि 8.30 बजे महाआरती एवं 56 भोग का आयोजन किया जाएगा। मंगलवार को हुई बैठक में मंदिर समिति के संरक्षक परसराम दीवान, किशन खलीफा, लोकेश रियार, नंदलाल बानिये, अध्यक्ष गोविन्द सफा, उपाध्यक्ष सोहन थम्मार, कुन्दन पटेल, सचिव एड. मनोज प्रजापति, सह सचिव प्रहलाद दीवान, कोषाध्यक्ष रतन सुराह, सह कोषाध्यक्ष विजय दीवान, प्रचार मंत्री प्रहलाद पटेल, प्रवक्ता भीम भगत, मीडिया प्रभारी श्रवण शर्मा 'राज', रामसिंह पटेल सहित अन्य सदस्य उपस्थित थे।

मप्र श्रमजीवी पत्रकार संघ तहसील मनासा की कार्यकारिणी गठित

मनासा, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। प्रदेश नेतृत्व के निर्देशानुसार एवं जिलाध्यक्ष प्रदीप जी जैन की अनुशंक्षा पर मध्यप्रदेश श्रमजीवी पत्रकार संघ तहसील मनासा की कार्यकारिणी का गठन किया गया जिसमे अध्यक्ष हेमंत शर्मा, उपाध्यक्ष नरेन्द कुशवाह, सोनू शास्त्री, महासचिव महेश मोनू मोदी, सचिव कुंजबिहारी कुशवाह, कोषाध्यक्ष नमन जैन एवं मनासा कार्यकारिणी सदस्यों मे दिनेश पढ़ायपंथी, दिलीप बोराना, नरेन्द राठौर , अनील कुशवाह, मदन बैरागी, राकेश गुर्जर, कैलाश सोडानी, मंगल गोस्वामी को मनोनीत किया गया।

मेवाड़ा सेन समाज ने मनाया भगवान श्री राम का जन्मोत्सव

मंदसौर, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। मेवाड़ा सेन समाज पंचायत श्री सत्यनारायण मंदिर श्री बालाजी मंदिर खानपुरा परिवार द्वारा भगवा श्री राम का जन्मोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया। समाज अध्यक्ष ब्रजेश सेन मारोठिया, समाज के वरिष्ठ आशीर्वाददाता नन्दकिशोर राठौर, फकीरचन्द परिहार, के साथ ही समाजजनों ने मंदिर में विराजित भगवान श्रीराम प्रतिमा सहित सभी श्रीविग्रहों की पूजा अर्चना व महाआरती की गई। कार्यक्रम के लाभार्थी परिवार पूरन मल सेन एवं निखिल सेन जवासिया वालों द्वारा प्रसादी वितरण किया गया। लाभार्थी परिवार पूरन मल सेन जवासिया वाले का डॉ. घीसालाल गंगवाल ने पुष्पहार पहनाकर सम्मान किया।

समाज अध्यक्ष ब्रजेश मारोठिया ने कहा कि प्रभु श्रीराम भारतीय जनमानस के रोम-रोम में रचे-बसे हैं, अंतर्मन में समाहित हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम का जीवन और उनके आदर्श सभी के लिये प्रेरणादायी है। श्री मारोठिया ने कहा कि आगामी 5 मई को सेन समाज के आराध्य संत शिरोमणि सेनजी महाराज के जन्मोत्सव पर भी अनेक आयोजन होंगे। जिसमें भी सभी समाजजन उत्साह के साथ भाग लेवे। समाज के वरिष्ठ श्री राठोर ने कहा कि भगवान विष्णु ने असूरों का नाश करने के लिये राम के रूप में धरती पर अवतार लिया था। मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम का जीवन, उनकी कर्तव्य निष्ठा और उच्च आदर्श पूरी मानवता के लिये मार्गदर्शन और प्रेरणा का स्त्रोत है। इस अवसर पर डॉ. घीसालाल गंगवाल, महेश चौहान, अशोक चौहान, कमल मारोठिया, दिनेश गेहलोद, राकेश मारोठिया, महेश परिहार, नागेश्वर चौहान, आदित्यसेन मारोठिया, सत्यनारायण मारोठिया, संजय सकवाया, पियुष सकवाया, कुणाल पंवार, अक्षय गेहलोद, अमित मारोठिया, रूद्र सेन आदि समाजजन उपस्थित थे। बैठक का संचालन नागेश्वर चौहान ने किया एवं आभार राकेश मारोठिया ने माना। उक्त जानकारी आदित्य सेन मारोठिया ने दी।

✻ नाम परिवर्तन सूचना ✻

मेरा पूर्व में ड्रायविंग लायसेंस में नाम रविसिंह चौहान पिता मनोहरसिंह था, वर्तमान व भविष्य में मुझे रवि सिंह चौहान पिता मनोहर सिंह चौहान के नाम से जाना व पहचाना जाता है, भविष्य में मुझे रवि सिंह चौहान पिता मनोहरसिंह चौहान के नाम से जाना व पहचाना जावे।

रवि सिंह चौहान पिता मनोहरसिंह चौहान
महावीर नगर, मंदसौर (म.प्र.)

दीप प्रज्वलित एवं आकाशदीप छोड़कर मतदाताओं को मतदान हेतु जागरूक किया

मंदसौर, 17 अप्रैल गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री दिलीप कुमार यादव एवं स्वीप नोडल एवं सीईओ जिला पंचायत श्री कुमार सत्यम के निर्देशन में जिले में मतदाता जागरूकता की विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जा रही है। चंबल नदी के घाट पर बसई में ग्राम वासियों के साथ ग्राम चौपाल आयोजित किया गया एवं दीप प्रज्ज्वलित कर आकाशदीप छोड़कर मतदाताओं को मतदान हेतु जागरूक किया गया। संयुक्त कलेक्टर श्रीमती शिवानी गर्ग ने मतदान की शपथ दिलाई गयी। इस दौरान डिप्टी कलेक्टर श्री शुभम पाटीदार ,तहसीलदार, रोजगार सहायक, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, ग्रामिणजन उपस्थित थे।

दिल्ली ने गुजरात को छह विकेट से हरा तीसरी जीत दर्ज की

अहमदाबाद, 17 अप्रेल। आईपीएल 2024 के 31वें मैच में दिल्ली कैपिटल्स ने गुजरात टाइटंस को छह विकेट से करारी शिकस्त देकर अंक तालिका में छठा स्थान हासिल कर लिया। अब टीम के खाते में छह अंक दर्ज हो गए हैं और टीम के नेट रनरेट (-0.074) में भी सुधार हुआ है। वहीं, गुजरात की टीम सातवें स्थान पर पहुंच गई है। दोनों टीमों के खाते में बराबर अंक हैं। इस मैच में दिल्ली के गेंदबाजों ने घातक प्रदर्शन किया और 89 रन के स्कोर पर गुजरात को ऑलआउट कर दिया। इसके जवाब में दिल्ली ने 67 गेंदों के शेष रहते हुए छह विकेट से लक्ष्य हासिल कर लिया।

लक्ष्य का पीछा करने उतरी दिल्ली की शुरुआत अच्छी हुई। पृथ्वी शॉ और जैक फ्रेजर-मैकगर्क के बीच पहले विकेट के लिए 25 रनों की साझेदारी हुई। स्पेंसर जॉनसन ने टीम को पहला झटका दिया। उन्होंने मैकगर्क को शिकार बनाया। वह दो चौकों और दो छक्कों की मदद से 20 रन बनाने में कामयाब हुए। वहीं, शॉ सिर्फ सात रन बना सके। इस मुकाबले में अभिषेक पोरेल ने 15, शाई होप ने 19, ऋषभ पंत ने 16 और सुमित कुमार ने नौ रन बनाए। पंत और सुमित नाबाद रहे। गुजरात के लिए संदीप वॉरियर ने दो विकेट चटकाए। वहीं, स्पेंसर जॉनसन और राशिद खान को एक-एक सफलता मिली।

राशिद खान के अलावा नहीं चला कोई बल्लेबाज– आईपीएल 2024 के 31वें मैच में गुजरात टाइटंस के बल्लेबाजों को दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ संघर्ष करते देखा गया। इस मैच में टीम 89 रन के स्कोर पर ऑलआउट हो गई। नंबर आठ पर उतरे राशिद खान के अलावा कोई भी बल्लेबाज 15 रन का आंकड़ा भी नहीं छू पाया। गुजरात की पारी की शुरुआत झटके के साथ हुई। सलामी बल्लेबाजी के लिए आए शुभमन गिल सिर्फ आठ रन बना सके। उन्होंने ईशांत शर्मा ने 11 रन के स्कोर पर शॉ के हाथों कैच कराया। वहीं, उनके साथी बल्लेबाज ऋद्धिमान साहा सिर्फ दो विकेट बना सके। इस मुकाबले में साई सुदर्शन ने 12, डेविड मिलर ने दो, अभिनव मनोहर ने आठ, राहुल तेवतिया ने 10, शाहरुख खान शून्य, मोहित शर्मा ने दो, नूर और जॉनसन ने एक-एक रन बनाया। वहीं, स्पेंसर नाबाद रहे। दिल्ली के खिलाफ राशिद खान का बल्ला जमकर गरजा। उन्होंने 24 गेंदों का सामना किया। दो चौकों और क छक्के की मदद से उन्होंने 31 रन बनाए। दिल्ली के लिए मुकेश कुमार ने तीन विकेट चटकाए।

✻✻✻ नाम परिवर्तन ✻✻✻

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा नाम AARIF HUSSAIN PATHAN S/o SHABBIR HUSSAIN है। आधार कार्ड में ARIF HUSAIN PATHAN S/o SHABBIR HUSAIN PATHAN है, जो सही है। ड्रायविंग लायसेंस में मेरे व पिता के नाम से S हटा के जाना व पहचाना जावें।

पता-नूर कालोनी, मंदसौर

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक आशुतोष नवाल के लिए गुरु मीड्यिा एण्ड इंटरटेनमेन्ट कम्पनी, शक्ति नगर मन्दसौर से मुद्रित एवं 77 लक्ष्मीनगर, वेदान्त विहार मन्दसौर से प्रकाशित। (हर प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र मन्दसौर रहेगा) संपादक– आशुतोष नवाल RNI-MPHIN2006/20356
समाचार पत्र में छपे विज्ञापनों के लिए समाचार पत्र उत्तरादायी नहीं है एवं विज्ञापनो में प्रकाशित विचार विज्ञापनदाता की निजी राय है। इससे समाचार पत्र का कोई संबंध नहीं है। फोन 495831, मो. 9425105927,28 ashugurumds@gmail.com, ashu_guru2@yahoo.co.in